गरवी गुजरात

RNI No.: UPHIN/25/A1697

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

लखनऊ से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 185
दि. 06.11.2025,
गुरुवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : ASHWANI KUMAR Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दीपक जलाकर देव दीपावली कार्यक्रम का किया शुभारंभ

(जीएनएस)।

वाराणसी। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आस्था, संस्कृति एवं परंपरा के महापर्व देव दीपावली के पावन पर्व पर नमो घाट पर पहला दीपक जलाकर विधिवत देव दीपावली का शुभारंभ किया। तत्पश्चात उन्होंने गंगा पूजन किया। मुख्यमंत्री के दीपक जलाते ही आस्था, संस्कृति एवं परंपरा के महापर्व पर श्री काशी विश्वनाथ के पवित्र धाम में मां गंगा के पावन तट व सभी 88 गंगा घाटों पर मनाए जा रहे देव दीपावली पर्व पर काशी के गंगा घाट असंख्य दीपकों से जगमग हुए।

दीपकों के जगमगाहट में गंगा घाट का विहंगम दृश्य देखते ही बन रहा था। ऐसा लग रहा था कि नभ मंडल से असंख्य तारिकाएं काशी के घाट पर देवताओं के स्वागत के लिए उत्तर आई हो। देव दिवाली भगवान शिव की राक्षस त्रिपुरासुर पर विजय की याद में मनाई जाती है। मान्यता है कि इस दिन भगवान शिव ने ब्रह्मांड की रक्षा की थी और उसी खुशी में कार्तिक पूर्णिमा के दिन सभी देवता काशी में प्रकट हुए थे और खुशी में गंगा घाट पर दीपावली मनाए थे।

इसके बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ नमो घाट से क्रूज से काशी के गंगा घाटों पर देव दीपावली के विहंगम दृश्य तथा शिवाला घाट पर गंगा के जल लहरियों पर लेजर शो का अवलोकन किया। इस दौरान गंगा घाटों ग्रीन आतिशबाजी भी हुआ। इस दौरान मुख्यमंत्री के साथ प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह, स्टांप एवं न्यायालय पंजीयन शुल्क राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) रविन्द्र जायसवाल, महापौर अशोक तिवारी, पूर्व मंत्री एवं विधायक डॉ नीलकंठ तिवारी, मुख्य सचिव एस पी गोयल, कमिश्नर एस. राजलिंगम, पुलिस कमिश्नर मोहित अग्रवाल, जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार सहित अन्य प्रशासनिक एवं पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी आदि लोग प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

दीपों का यह त्योहार वाराणसी के घाटों को एक दिव्य दृश्य में बदल देता है। दिवाली के पंद्रह दिन बाद, कार्तिक पूर्णिमा को मनाए जाने वाले इस त्योहार में, पूरा नदी तट लाखों मिट्टी के दीपों से जगमगा उठता है, जो एक ऐसा नजारा प्रस्तुत करता है जो कालातीत लगता है। हालाँकि इसका वर्तमान स्वरूप 1985 का ही है, यह त्योहार अपने आप में पौराणिक कथाओं और सदियों पुरानी परंपराओं में गहराई से निहित है। एक पौराणिक कथा भगवान शिव और राक्षस तारकासुर के तीन पुत्रों-विद्युन्माली, तारकाक्ष और कमलाक्ष-की कहानी कहती है।

घोर तपस्या के माध्यम से, इन भाइयों ने भगवान ब्रह्मा से वरदान प्राप्त किया कि स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल लोक में स्थित, सोने, चाँदी और लोहे से बने तीन अजेय किले। त्रिपुरा नामक ये किले, हजार साल में केवल एक बार ही बनते थे, और इन्हें एक असंभव से दिखने वाले रथ से छोड़े गए एक ही बाण से, और वह भी केवल क्रोध से रहित रथ से ही, नष्ट किया जा सकता था। इस वरदान के प्रभाव में, राक्षस फलते-फूलते रहे, जिससे देवता भयभीत हो गए। पहले तो न तो ब्रह्मा और न ही शिव ने हस्तक्षेप किया, क्योंकि दोनों भाई धर्म से रहते थे। लेकिन विष्णु की सलाह पर, एक दिव्य प्राणी द्वारा प्रचारित एक नए सिद्धांत के माध्यम से राक्षसों को आसानी से गुमराह किया गया, यहां तक कि नारद ऋषि को भी उनका धर्म परिवर्तन करा दिया गया।

एक बार जब वे धर्म से भटक गए, तो शिव ने देवताओं की संयुक्त शक्तियों को अवशोषित कर लिया और एक असाधारण रथ बनाया। पृथ्वी उसका शरीर, मेरु पर्वत उसका धनुष, वासुकि नाग उसकी डोर और पाशुपत अस्त्र उसका एकमात्र बाण। रथ खींचने के लिए विष्णु ने एक शक्तिशाली बैल का रूप धारण किया। जब तीनों किले एक सीध में आ गए, तो शिव ने बाण छोड़ा और त्रिपुरा को नष्ट कर दिया। मारे गए प्राणियों के प्रति उनके करुणा के आंसुओं से रुद्राक्ष का वृक्ष उग आया। बुराई पर अच्छाई की यह जीत देव दीपावली की पौराणिक जड़ों में से एक है।

एक और कथा राजा दिवोदास (रिपुंजय) से संबंधित है। दैवीय शक्तियों से संपन्न, उन्होंने एक संधि के तहत काशी पर शासन किया, जिसके तहत शिव और देवताओं को भी नगर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी। जब शिव ने पार्वती से विवाह किया, तो वे काशी में निवास करना चाहते थे, लेकिन इस संधि के कारण उन्हें ऐसा करने से रोक दिया गया। देवताओं ने दिवोदास में दोष ढूँढ़ने का प्रयास किया, योगिनियों, आदित्यों, भैरवों और यहाँ तक कि ब्राह्मण वेशधारी गणेश को भी भेजा।

किसी को कोई दोष नहीं मिला, क्योंकि राजा न्यायप्रिय और धर्मात्मा थे। समय के साथ, गणेश ने, मुख्य सलाहकार के रूप में, दिवोदास को मन की शांति के लिए शिव को वापस बुलाने के लिए धीरे से राजी किया। राजा ने आज के मीर घाट के पास एक शिवलिंग की स्थापना की और शिव से वहाँ स्थायी रूप से निवास करने का अनुरोध किया। अति प्रसन्न होकर, देवता काशी लौट आए और घाटों को दीपों की पंक्तियों से जगमगा दिया, जिससे दिव्य घर वापसी के पर्व के रूप में देव दीपावली का जन्म हुआ।

आज, यह उत्सव किसी अद्भुत अनुभव से कम नहीं है। असंख्य दीप घाटों, मंदिरों, छतों पर और यहाँ तक कि गंगा नदी पर भी तैरते हैं, जिससे इसकी अर्धचंद्राकार परिक्रमा प्रकाश की एक झिलमिलाती आकाशगंगा में बदल जाती है। परंपरा के अनुसार, इंदौर की मराठा रानी अहिल्याबाई होल्कर ने 18वीं शताब्दी में इस प्रथा को पुनर्जीवित किया था और पंचगंगा घाट पर एक हजार दीपों वाला एक विशाल स्तंभ बनवाया था, जो आज भी हर साल सबसे पहले जलाया जाने वाला स्थान है।

देव दीपावली उत्सव आतिशबाजी, सजी हुई नावों, अग्नि-भक्षक और तैरते मंचों पर शास्त्रीय संगीत और नृत्य के सांस्कृतिक प्रदर्शनों से समृद्ध होता है। नमो घाट, दशाश्वमेध और शीतला घाटों पर, विशाल दीपों, कपूर की लौ और पुष्पांजलि के साथ भव्य गंगा आरती और दुग्धाभिषेक किया जाता है। शिवाला घाट पर गंगा की उठती जल तरंगों पर लेजर शो ने प्राचीन वैभव में एक आधुनिक स्पर्श जोड़ा है। फिर भी, यह त्यौहार केवल आनंद का ही प्रतीक नहीं है। यह भारत के शहीदों के प्रति एक सच्ची श्रद्धांजलि भी है।

थलसेना, वायुसेना, नौसेना, सीआरपीएफ और एनसीसी इकाइयों के सैनिक एक औपचारिक सलामी, अंतिम पोस्ट में भाग लेते हैं,

किसानों के हित में गुजरात सरकार का महत्वपूर्ण निर्णय

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में गुजरात में 9 नवंबर से शुरू होगी मूंगफली, मूंग, उड़द और सोयाबीन की समर्थन मूल्य पर खरीद : कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी

किसानों से समर्थन मूल्य पर लगभग 15,000 करोड़ रुपए से अधिक मूल्य की मूंगफली, मूंग, उड़द और सोयाबीन की खरीदी की जाएगी

राज्य में मूंगफली के बंपर उत्पादन को ध्यान में रखकर प्रति किसान 125 मन मूंगफली की खरीदी करने का उदारतम निर्णय

गांधीनगर, 05 नवंबर : कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी ने बुधवार को गांधीनगर में गुजरात सरकार द्वारा किसानों के हित में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय के बारे में मीडिया को जानकारी देते हुए बताया कि राज्य के किसानों को उनकी उपज के लाभकारी मूल्य के साथ-साथ आर्थिक सुरक्षा भी मिल सके, इसके लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में गुजरात में आगामी 9 नवंबर से समर्थन मूल्य पर मूंगफली, मूंग, उड़द और सोयाबीन

जैसी खरीफ फसलों की खरीद शुरू करने का निर्णय किया गया है।

कृषि मंत्री ने इस संदर्भ में कहा कि देश के किसानों को आर्थिक नुकसान से बचाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में चालू वर्ष में समर्थन मूल्य में उल्लेखनीय वृद्धि करने का निर्णय किया गया है। गत वर्ष की तुलना में चालू वर्ष में मूंगफली के मूल्य में प्रति क्विंटल 480 रुपए, उड़द के मूल्य में 400 रुपए और सोयाबीन के मूल्य में प्रति क्विंटल 436 रुपए की वृद्धि की गई है। मूल्य में बढ़ोतरी के साथ-साथ लाभकारी मूल्य मिलने से किसानों को इसका अधिकतम लाभ मिलेगा।

श्री वाघाणी ने कहा कि राज्य में प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान के तहत चालू सीजन में राज्य के किसानों से लगभग 15,000 करोड़ रुपए से अधिक मूल्य की मूंगफली, सोयाबीन, उड़द और मूंग की खरीदी करने का आयोजन किया गया है। इससे राज्य के किसानों को अपनी उपज कम बाजार मूल्य पर नहीं बेचनी पड़ेगी।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुरु नानक जयंती के अवसर पर गुरु ग्रंथ साहिब के दर्शन-पूजन किए

गांधीनगर, 05 नवंबर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने श्री गुरु नानक जी की 556वीं जयंती के पावन पर्व पर बुधवार को गांधीनगर जिले के पोर गांव में स्थित गुरुद्वारे में सिख परिवारों की ओर से

आयोजित सत्संग, कीर्तन और पूजा में भावपूर्वक भाग लिया।

मुख्यमंत्री ने गुरुद्वारा में गुरु ग्रंथ साहिब के दर्शन किए और पूजा-अर्चना कर राज्य के सभी नागरिकों की सुख-समृद्धि, शांति और विकास के लिए अरदार की।

उपराष्ट्रपति श्री सी. पी. राधाकृष्णन ने महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास और जमीनी स्तर पर लोकतंत्र के मॉडल के रूप में 'लखपति दीदी' पहल की सराहना की

(जीएनएस)।

उपराष्ट्रपति श्री सी. पी. राधाकृष्णन ने आज छत्तीसगढ़ के राजनंदगांव में 'लखपति दीदी सम्मेलन' में भाग लिया।

उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए, उपराष्ट्रपति ने 'लखपति दीदी' पहल की सराहना की तथा इसे भारत की महिलाओं की शक्ति और दृढ़ संकल्प का प्रतीक बताया।

उन्होंने कहा कि यह पहल उन महिलाओं - दीदियों - के संकल्प को दर्शाती है जो चुनौतियों को अवसरों में बदल रही हैं। उपराष्ट्रपति ने कहा कि 'लखपति दीदी' शब्द केवल आय का नहीं, बल्कि स्वतंत्रता, सम्मान और आत्मविश्वास का प्रतीक है।

उन्होंने कहा कि देशभर में महिलाओं के नेतृत्व में हजारों स्वयं सहायता समूह इस बात को दर्शा रहे हैं कि कड़ी मेहनत, अनुशासन और एकजुटता कैसे जीवन को बदल सकती है। उन्होंने जोर देकर कहा कि इन महिलाओं की उपलब्धियां देश की उन बहनों की परिवर्तनकारी शक्ति को रेखांकित करती हैं, जो ग्रामीण भारत की रीढ़ हैं।

सरकार के प्रयासों की सराहना करते हुए, उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का तीन करोड़ लखपति दीदी बनाने का सपना महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास की दिशा में एक असाधारण कदम है - एक ऐसा आंदोलन, जिसकी

छत्तीसगढ़ में स्पष्ट अभिव्यक्ति हुई है।

उपराष्ट्रपति ने छत्तीसगढ़ एवं पूरे देश में महिलाओं के बढ़ते नेतृत्व की प्रशंसा की। उन्होंने 'लखपति दीदी' पहल को एक ऐसा जीवंत आंदोलन बताया, जिसने देशभर में दो करोड़ से अधिक महिलाओं और छत्तीसगढ़ में पांच लाख महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों एवं आय-सृजन की गतिविधियों के जरिए वित्तीय आजादी हासिल करने में सक्षम बनाया है।

उन्होंने राज्य सरकार और राजनंदगांव जिला प्रशासन के समर्पित प्रयासों की सराहना की, जिससे 9,663 स्वयं सहायता समूहों के जरिए एक लाख से अधिक महिलाओं को जोड़ा गया है और 700 करोड़ रुपये से अधिक की वित्तीय सहायता प्रदान की गई है। उन्होंने यह भी कहा कि महिला सम्मान योजना के तहत राज्य द्वारा 20 किश्तों में कुल 13,000 करोड़ रुपये से अधिक की राशि के सीधे हस्तांतरण ने महिला लाभार्थियों को सशक्त बनाया है।

श्री सी.पी. राधाकृष्णन ने महिला सशक्तिकरण के प्रतीक के रूप में राजनंदगांव की अनूठी स्थिति पर प्रकाश डाला और कहा कि 1,000 से अधिक महिलाएं स्थानीय स्वशासन में पंच, सरपंच, जनपद और जिला पंचायत सदस्य के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने इस तथ्य को रेखांकित किया कि लोकतंत्र केवल संसद तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह ग्राम सभाओं, पंचायतों और स्वयं सहायता समूहों में भी बसता है, जहां नागरिक मिलकर चर्चा करते हैं, निर्णय लेते हैं और विकास करते हैं। उन्होंने कहा कि लखपति दीदी आंदोलन भागीदारी, पारदर्शिता और स्थानीय सशक्तिकरण को सुनिश्चित करके लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करता है।

उन्होंने कहा कि इस तरह की पहल ने इस धारणा को बदल दिया है कि महिलाओं को केवल घर तक ही सीमित रहना चाहिए। आज, वे प्रशासक के रूप में उभर रही हैं, आर्थिक आजादी हासिल कर रही हैं और भावी नेताओं को प्रेरित कर रही हैं।

उपराष्ट्रपति ने सरकारी सहायता से सभी बाधाओं पर विजय पाने के लिए लखपति दीदियों के साहस और दृढ़ संकल्प की सराहना की तथा आशा व्यक्त की कि वे शीघ्र ही करोड़पति दीदी बन जायेंगी।

छत्तीसगढ़ में हुई प्रगति को याद करते हुए, उन्होंने कहा कि एक समय ऐसा भी था जब इस राज्य को पानी, बिजली और विकास के अभाव का सामना करना पड़ता था, लेकिन आज यह राज्य पूरे देश के लिए बिजली का उत्पादन करता है और इसने स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सुधार किया है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने तीन अग्रणी नवाचारों की सौगात दी है: क्यूएसआईपी भारत का अपना क्वांटम सुरक्षा चिप; 25-क्यूबिट क्यू पी यू

भारत का पहला क्वांटम कंप्यूटिंग चिप, जो कंप्यूटिंग के भविष्य को सशक्त करेगा; और सीएआर-टी सेल थेरेपीः विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सहयोग से भारतीय नवप्रवर्तकों द्वारा विकसित भारत की पहली स्वदेशी कैंसर कोशिका थेरेपी।

सीएआर-टी सेल थेरेपीः इम्यूनोएक्ट द्वारा भारत की पहली स्वदेशी कैंसर कोशिका थेरेपी, जिसे डीबीटी और बीआईआरएसी का समर्थन प्राप्त था।

(जीएनएस)।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र को तीन अग्रणी नवाचारों की सौगात दी हैः क्यूएसआईपीः भारत का अपना क्वांटम सुरक्षा चिप; 25-क्यूबिट क्यूपीयूः भारत की पहली क्वांटम कंप्यूटिंग चिप, जो कम्प्यूटेशन के भविष्य को शक्ति प्रदान करेगी और सीएआर-टी सेल थेरेपीः भारत की पहली स्वदेशी कैंसर सेल थेरेपी, जो चल रहे उभरते विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार कॉन्क्लेव ईएसटीआईसी 2025 के दौरान भारतीय इनोवेटर्स द्वारा विकसित की गई है। इनमें नेक्सकार19 भी शामिल है, जो इम्यूनोएक्ट द्वारा भारत में विकसित दुनिया की पहली मानवीकृत सीएआर-टी थेरेपी है - एक अभूतपूर्व नवाचार जो वास्तव में "भारत में निर्मित, दुनिया के लिए" है। इस नवाचार को डीबीटी और बीआईआरएसी द्वारा समर्थित किया गया था।

काइमेरिक एंटीजन रिसेप्टर टी-सेल (सीएआर-टी) थेरेपी कैंसर के इलाज में एक बड़ी सफलता है। दुनिया भर में किए गए नैदानिक परीक्षणों ने अंतिम चरण के रोगियों, विशेष रूप से एक्यूट लिम्फोसाइटिक ल्यूकेमिया से पीड़ित रोगियों में आशाजनक परिणाम दिखाए हैं।

नेक्सकार19 भारत की पहली जीवित दवा ने वैज्ञानिक कठोरता या रोगी सुरक्षा से समझौता किए बिना जीन थेरेपी को किफायती और सुलभ बना दिया है।

इम्यूनोएक्ट यह आईआईटी बॉम्बे का एक स्पिन-ऑफ है, इसे जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (बीआईआरएसी) की बायोनेस्ट पहल से वित्त पोषण, मार्गदर्शन और संसाधनों के माध्यम से समर्थन मिला, जबकि इस स्टार्ट-अप को सोसाइटी ऑफ इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप (एसआईएनई) एक प्रौद्योगिकी व्यवसाय इनक्यूबेटर में इनक्यूबेट किया गया था।

वर्ष 2021 में लेंटिवायरस निर्माण और नैदानिक टाटा मेमोरियल अस्पताल के ए सी टी आर ई सी केंद्र में भारत के पहले सीएआर-टी के परीक्षण के लिए टीएमसी-आईआईटी बॉम्बे की टीम को डीबीटी और बीआईआरएसी द्वारा राष्ट्रीय बायोफार्मा मिशन के माध्यम से आंशिक रूप से समर्थन दिया गया था।

'तुम हिंदू हो', पाकिस्तान की नापाक हरकत, गुरुनानक जयंती पर हजारों खर्च कर गए 14 तीर्थयात्रियों को भेजा वापस

(जीएनएस)।

मई 2025 में भारत और पाकिस्तान के बीच 'ऑपरेशन सिंदूर' के घातक संघर्ष के बाद, पहली बार बड़ी संख्या में सिख तीर्थयात्रियों ने वाघा-अटारी सीमा पार कर पाकिस्तान में प्रवेश किया। यह यात्रा गुरु नानक देव जी की 556वीं जयंती के 10 दिवसीय उत्सव के लिए है। जिसके अंतर्गत भारतीय भक्त पाकिस्तान में स्थित गुरुद्वारे के दर्शन करेंगे। लेकिन अंतर-धार्मिक सद्भाव का प्रतीक इस यात्रा के दौरान भी पाकिस्तान अपनी नापाक हरकतों से बाज नहीं आया।

पाकिस्तान ने गुरु नानक जयंती के अवसर पर सिख जत्थे के साथ पाकिस्तान पहुंचे 14 हिंदू तीर्थयात्रियों को भारत वापस भेज दिया। पाकिस्तानी अधिकारियों ने इन तीर्थयात्रियों से कहा कि वे सिख नहीं, हिंदू है इसलिए उन्हें वापस लौटना होगा।

ध्यान रहे गुरु नानक देव की जयंती, जिसे गुरुपर्व या प्रकाश पर्व के नाम से भी जाना जाता है, सिखों का एक महत्वपूर्ण त्योहार है। इस अवसर पर लगभग 1900 सिख तीर्थयात्रियों का एक जत्था अटारी-वाघा सीमा पार कर पाकिस्तान पहुंचा था, जिसमें अमर चंद और उनका परिवार भी शामिल था।

सारी औपचारिकताएं पूरी होने के बाद वापस भेजा

रिपोर्ट के मुताबिक, हिंदू श्रद्धालु सिख जत्थे के साथ अटारी-वाघा सड़क मार्ग से पाकिस्तान पहुंचे थे और सभी औपचारिकताएं भी पूरी कर ली थीं। अमर चंद ने बताया कि उन्हें तीर्थयात्रियों के लिए विशेष बस में चढ़ने को कहा गया था।

दिल्ली और लखनऊ के थे ये तीर्थयात्री

न्यूज एजेंसी पीटीआई की रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली और लखनऊ के इन 14 हिंदुओं को पाकिस्तानी अधिकारियों ने यह कहकर वापस भेज दिया कि वे सिख जत्थे के साथ यात्रा नहीं कर सकते क्योंकि वे सिख धर्म के नहीं हैं। इसके बाद सभी को तुरंत भारत वापस भेज दिया गया।

पाकिस्तान बोला- तुम हिंदू हो, तुम सिख नहीं हो...

तीर्थयात्रियों में से एक, अमर चंद ने बताया कि पाकिस्तानी अधिकारियों ने उनसे स्पष्ट रूप से कहा कि "तुम हिंदू हो, तुम सिख जत्थे के साथ नहीं जा सकते।" अमर चंद के परिवार का दावा है कि वे प्रकाश पर्व के अवसर पर पाकिस्तान के गुरुद्वारों में मत्था टेकना चाहते थे।

गरवी गुजरात
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2002

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
गरवी गुजरात हिंदी चेनल देखिये

सम्पादकीय

भारत की आर्थिक प्रगति को मिले पंख

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को दिल्ली स्थूल ऑफ इकोनामिक्स में छात्रों को संबोधित करते हुए दावा किया कि भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर अग्रासर है। साथ ही यह भी उम्मीद जताईं कि 2025-26 में 4.4 प्रातिशत राजकोषीय घाटे के निर्धारित लक्ष्य को हासिल करने में भी सफल रहेगी।

वित्तमंत्री सीतारमण का यह आशावाद निराधार नहीं है। किन्तु उन्होंने भारत की जिस आर्थिक ताकत का उल्लेख किया वही दुनिया के वुछ देशों की आंखों में किरकिरी बन गया है। यही नहीं विकसित देशों में अमेरिका ऐसा देश है जो भारत की प्रागति से न सिर्प चिढ़ गया है बल्कि आर्थिक विकास गति को रोकने का प्रायास भी कर रहा है।

दरअसल अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष वर्ष में दो बार 'विश्व आर्थिक परिदृश्य' के नाम से अप्रैल और अक्टूबर में दो बार रिपोर्ट जारी करता है। इसी रिपोर्ट में अक्टूबर 2025 में बताया गया कि भारत की अर्थव्यवस्था 4.19 ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बन चुकी है। भारतीय अर्थव्यवस्था के मुकाबले में जापान है जिसकी अर्थव्यवस्था भी 4.19 ट्रिलियन डालर है।

आईएमएफ के सव्रे में दोनों को लगभग सामान दिखाया गया है। मतलब कि जहां जापान की अर्थव्यवस्था 4.279 ट्रिलियन डालर है वहीं भारत की 4.125 ट्रिलियन डालर है। लेकिन विश्व के तीसरे स्थान पर जर्मनी की अर्थव्यवस्था 5.013 ट्रिलियन डालर है। पहले स्थान पर 30.615 ट्रिलियन के साथ अमेरिका तो 19.398 ट्रिलियन डालर के साथ चीन दूसरे स्थान पर है। आईएमएफ के आंकड़े तो भारत को स्पष्ट रूप से 5वें स्थान पर दिखा रहे हैं। किन्तु सीतारमण का यह कहना कि जल्दी ही भारतीय अर्थव्यवस्था तीसरे स्थान पर आ जाएगी, भी गलत नहीं है। इसका मुख्य कारण है भारत के विकास दर में तेजी। आईएमएफ के आंकड़ों के मुताबिक जहां भारत की विकास दर 7.8 प्रातिशत है। 2025-25 में भी भारत की विकास दर 6.5 प्रातिशत थी जो अर्थशास्त्रियों के मुताबिक अन्य देशों की तुलना में काफी अधिक थी। जापान की विकास दर आंकलन आईएमएफ ने 1.1 प्रातिशत किया है जबकि जर्मनी की 0.2 प्रातिशत। सवाल यह है कि जब जर्मनी और जापान की अर्थव्यवस्था के विकास की गति इतनी मंद हो तो अंतर्राष्ट्रीय रेटिग एजेंसिया क्यों न अनुमान लगाएं कि जल्दी ही भारत जर्मनी और जापान को न मात्र पीछे छोड़ देगा बल्कि अपना आकार भी 6 ट्रिलियन डालर तक पहुंचाने में सफलता हासिल कर लेगा।

असल में भारत ने अभी तक जिन देशों को पछाड़ा है उनमें ब्रिटेन, प्रांस, इटली, रूस और कनाडा हैं। 2014 के पहले तो भारत दसवें स्थान पर वहीं था, जहां पर आज कनाडा है। किन्तु भारत की आर्थिक प्रागति को पंख लगा और आज भारत ने 6 देशों को पीछे छोड़ दिया। यह सच है कि भारत की अर्थव्यवस्था छोटी थी इसलिए प्राति व्यक्ति आय के मामले में भारत काफी पीछे था। लेकिन जो देश पहले भारत से ज्यादा विकसित थे, उनकी आर्थिक स्थिरता के कारण उनके देश में प्राति व्यक्ति आय ज्यादा है। भारत प्रागति के रास्ते पर सरपट भले ही दौड़ रहा है किन्तु भारत ने आर्थिक आकार में जिन देशों को पीछे छोड़ा वहां प्राति व्यक्ति आय यानि पर वैपिटल इनकम की दृष्टि से भारत पीछे है। इसलिए जो अर्थशास्त्री भारत को आर्थिक महाशक्ति मानने से इंकार करते हैं, उनका मानना है कि यदि भारत को प्राति व्यक्ति आय बढ़ानी है तो जीडीपी को और बढ़ाना होगा यानि 7.8 से भी ज्यादा। यदि भारत में उत्पादकता की यही गति बनी रहेगी तो यह आंकड़ा आने वाले दिनों में और बढ़ सकता है। लेकिन एक बात तो दावे के साथ कही जा सकती है कि यदि समाज के सभी वर्गो की आय में वृद्धि स्थायी रूप से बनी रही तो भारत की प्राति व्यक्ति आय भी बढ़ेगी।

बहरहाल वित्त मंत्री का यह अनुमान भी सटीक साबित हुआ कि भारत के अनुमान के मुताबिक ही राजकोषीय घाटा 4.4 प्रातिशत रहा। इससे एक बात तो स्पष्ट है कि आर्थिक प्रागति के लिए भारत ने जो दिशा चुनी वह सही थी और नीति अपनाईं वह स्पष्ट थी।

उपराष्ट्रपति श्री सी. पी. राधाकृष्णन छत्तीसगढ़ रजत महोत्सव के समापन समारोह में शामिल हुए

उपराष्ट्रपति ने छत्तीसगढ़ में उल्लेखनीय प्रगति और समावेशी विकास पर प्रकाश डाला

उपराष्ट्रपति ने रजत महोत्सव को विकसित छत्तीसगढ़ के माध्यम से विकसित भारत का संकल्प बताया

उपराष्ट्रपति ने जनजातीय समुदायों को वन, संस्कृति और विरासत का संरक्षक बताया

उपराष्ट्रपति ने सामूहिक इच्छाशक्ति और विकास के माध्यम से नक्सलवाद को समाप्त करने में छत्तीसगढ़ की सफलता की सराहना की

'छत्तीसगढ़ में विकास और विश्वास ने भय और हिंसा का स्थान लिया' - श्री सी.पी. राधाकृष्णन

छत्तीसगढ़ सहभागी विकास और जन-प्रेरित परिवर्तन का प्रतीक

राज्य ने सांस्कृतिक जड़ों के संरक्षण के साथ आधुनिकीकरण का संतुलन किया - उपराष्ट्रपति

उपराष्ट्रपति ने छत्तीसगढ़ में उल्लेखनीय प्रगति और समावेशी विकास पर प्रकाश डाला

उपराष्ट्रपति ने रजत महोत्सव को विकसित छत्तीसगढ़ के माध्यम से विकसित भारत का संकल्प बताया

उपराष्ट्रपति ने जनजातीय समुदायों को वन, संस्कृति और विरासत का संरक्षक बताया

उपराष्ट्रपति ने सामूहिक इच्छाशक्ति और विकास के माध्यम से नक्सलवाद को समाप्त करने में छत्तीसगढ़ की सफलता की सराहना की

'छत्तीसगढ़ में विकास और विश्वास ने भय और हिंसा का स्थान लिया' - श्री सी.पी. राधाकृष्णन

छत्तीसगढ़ सहभागी विकास और जन-प्रेरित परिवर्तन का प्रतीक

राज्य ने सांस्कृतिक जड़ों के संरक्षण के साथ आधुनिकीकरण का संतुलन किया - उपराष्ट्रपति

(जीएनएस)।

उपराष्ट्रपति श्री सी. पी. राधाकृष्णन आज नवा रायपुर में आयोजित छत्तीसगढ़ रजत महोत्सव के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। यह आयोजन छत्तीसगढ़ राज्य के गठन के 25 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया, जिसमें राज्य की विकास, प्रगति और सांस्कृतिक समृद्धि की प्रेरक यात्रा का जश्न मनाया गया।

उपराष्ट्रपति ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए, इस ऐतिहासिक रजत जयंती समारोह में छत्तीसगढ़ के लोगों के साथ शामिल होने पर अपार प्रसन्नता व्यक्त की जिसका उद्घाटन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया था। इस पाँच दिवसीय महोत्सव में लोगों ने छत्तीसगढ़ की समृद्ध संस्कृति और इसके प्रभावशाली सामाजिक-आर्थिक बदलाव की झलक देखी।

उपराष्ट्रपति ने 1 नवम्बर 2000 को राज्य के निर्माण में स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी के दूरदर्शी नेतृत्व को गर्व से याद किया और एक पूर्व लोकसभा सांसद के रूप में अपने जुड़ाव को व्यक्तिगत तौर पर प्रकट किया, जब उन्होंने राज्य पुनर्गठन विधेयक का समर्थन किया था। उन्होंने छत्तीसगढ़ की असाधारण 25 साल की यात्रा की सराहना की - भारत के सबसे युवा राज्यों में से एक होने से लेकर सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में प्रगति के एक मॉडल के रूप में उभरने तक।

श्री सी.पी. राधाकृष्णन ने नक्सलवाद के खतरे को खत्म करने में राज्य की सफलता की सराहना की और इसका श्रेय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के दृढ़ नेतृत्व के साथ-साथ राज्य सरकार, सुरक्षा बलों और स्थानीय समुदायों के समर्पित प्रयासों को दिया। उन्होंने कहा कि विकास और विश्वास ने छत्तीसगढ़ में भय और हिंसा का स्थान ले लिया है।

उपराष्ट्रपति ने छत्तीसगढ़ की सफलता की नींव रखने वाले लोगों - किसानों, जनजातीय समुदायों, उद्यमियों, शिक्षकों और युवाओं - की सराहना की। उन्होंने राज्य की अनुकरणीय सार्वजनिक वितरण प्रणाली की विशेष रूप से सराहना की, जो 72 लाख से अधिक लाभार्थियों को निःशुल्क खाद्यान्न प्रदान करती है, और सार्वजनिक वितरण प्रणाली को सुदृढ़ बनाने के लिए पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह को बधाई दी।

श्री सी.पी. राधाकृष्णन ने राज्य की प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए आदिवासी समुदायों को सम्मान दिया। उन्होंने

आदिवासी समुदायों की बुद्धिमत्ता, संस्कृति और सतत जीवन शैली की सराहना की, जो आज के पारिस्थितिक और सामाजिक संदर्भ में गहरी प्रासंगिकता रखती है।

उपराष्ट्रपति ने राज्य में उल्लेखनीय बुनियादी ढांचे के विकास पर भी प्रकाश डाला, जिसमें व्यापक सड़क, रेल, एक्सप्रेसवे और हवाई अड्डे की कनेक्टिविटी शामिल है, जिसने सुदूरवर्ती जिलों को राष्ट्रीय बाजारों से जोड़ा है। उन्होंने नवा रायपुर की भारत के पहले ग्रीनफील्ड शहर के रूप में प्रशंसा की, जो आईटी हब, फार्मा हब, एआई डेटा सेंटर पार्क और उन्नत स्वास्थ्य सेवा के लिए एक विश्वस्तरीय मेडिसिटी जैसी नई-पुरानी पहलों के माध्यम से एक वैश्विक क्षमता केन्द्र बनने के लिए तैयार है।

उन्होंने "अंजोर विजन @2047" के अंतर्गत सेमीकंडक्टर निर्माण और डिजिटल शासन सुधारों सहित उभरती प्रौद्योगिकियों को अपनाने वाले छत्तीसगढ़ के प्रयासों को रेखांकित किया, जिसका उद्देश्य आर्थिक विस्तार, मानव विकास और स्थायी शासन को बढ़ावा देना है, जो एक विकसित भारत की राष्ट्रीय कल्पना के अनुरूप है।

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक परम्पराओं की प्रशंसा करते हुए, उपराष्ट्रपति ने क्षेत्र के पारंपरिक नृत्यों जैसे पंथी और कर्मा, और इसकी समृद्ध आदिवासी कलाओं और शिल्प की सराहना की। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ विविधता में एकता की भारतीय भावना का प्रतीक है, जहाँ सांस्कृतिक संरक्षण और आधुनिकीकरण साथ-साथ चलते हैं।

वास्तविक प्रगति पर जोर देते हुए, श्री सी.पी. राधाकृष्णन ने कहा कि "प्रगति केवल सकल घरेलू उत्पाद से नहीं, बल्कि लोगों के चेहरों पर मुस्कान, शासन में उनके विश्वास और हर बच्चे की आँखों में चमकती आशा से भी मापी जाती है।"

अपने संबोधन के समापन पर, उपराष्ट्रपति ने छत्तीसगढ़ के युवाओं से कृत्रिम बुद्धिमत्ता, हरित प्रौद्योगिकियों और वैश्विक बाजारों में उभरते अवसरों का लाभ उठाने और साहस, रचनात्मकता और करुणा के साथ राष्ट्र निर्माण में योगदान देने का आग्रह किया।

उन्होंने कहा कि रजत महोत्सव को केवल अतीत के उत्सव के रूप में नहीं, बल्कि भविष्य के लिए एक प्रतिज्ञा के रूप में देखा जाना चाहिए - एक विकसित छत्तीसगढ़ के माध्यम से एक विकसित भारत के निर्माण, लोकतंत्र को मजबूत करने, संस्कृति का सम्मान करने और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उज्जवल कल छोड़ने की प्रतिज्ञा।

छत्तीसगढ़ रजत महोत्सव के समापन समारोह में छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्री रमन डेका; मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय; छत्तीसगढ़ विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह; और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

देव दीपावली पर काशी में उमड़ा आस्था का सैलाब, 84 घाटों पर 25 लाख दीपों से जगमगाई गंगा

(जीएनएस)।

वाराणसी, जिसे दुनिया काशी के नाम से जानती है, आज एक बार फिर दिव्यता और आध्यात्मिक ऊर्जा से सराबोर है। कार्तिक पूर्णिमा के पावन अवसर पर देव दीपावली का महापर्व आज बड़े धूमधाम से मनाया जा रहा है।

गंगा के 84 घाटों पर 25 लाख दीपों की रौशनी फैली हुई है, जिसने पूरी नगरी को स्वर्ग समान बना दिया है। पिछले वर्ष (2024) की तुलना में इस बार 5 लाख अधिक दीप जलाए गए हैं। जहां 2024 में 20 लाख दीप जगमगाए थे, वहीं इस बार काशी के घाटों पर 25 लाख दीपों की आभा ने एक नया इतिहास रच दिया है।

काशी के घाटों पर उमड़ा जनसैलाब

देव दीपावली के इस पर्व पर देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु काशी पहुंचे हैं। दशाश्वमेध घाट से लेकर अस्सी घाट तक घाटों पर आस्था की लहर बह रही है। श्रद्धालु दीपदान कर गंगा में आरती के साथ अपने पापों से मुक्ति और मोक्ष की कामना कर रहे हैं। गंगा आरती देखने के लिए घाटों के साथ-साथ नावों में भी हजारों लोग जुटे हैं। पूरा वातावरण "हर हर

महादेव" और "जय मां गंगे" के जयकारों से गूंज रहा है।

दशाश्वमेध घाट की भव्य गंगा आरती

देव दीपावली की सबसे भव्य आरती दशाश्वमेध घाट पर संपन्न हुई। यहां 21 अर्चक और 42 देव कन्याओं ने रिद्धि-सिद्धि के रूप में गंगा आरती की। 21 कुंटल फूलों और 51 हजार दीपों से सजे घाट पर जब शंखनाद की गूंज हुई तो पूरा वातावरण अद्भुत ऊर्जा से भर गया। आरती में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी भाग लिया। उन्होंने दीप प्रज्वलित कर सभी को देव दीपावली की शुभकामनाएं दीं और कहा कि "देव दीपावली काशी की पहचान बन चुकी है। यह न सिर्फ धार्मिक बल्कि सांस्कृतिक एकता का प्रतीक भी है।"

प्रयागराज में 5 लाख दीप और मथुरा में 2 लाख दीप जलाए गए हैं। इससे पहले अयोध्या में 19 अक्टूबर को दीपोत्सव मनाया गया था, जिसने विश्व रिकॉर्ड बनाया था।

श्रद्धालुओं की सुरक्षा में NDRF की टीमें तैनात

श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को देखते हुए सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। NDRF की 9 टीमें वाराणसी के प्रमुख घाटों पर जिला प्रशासन के समन्वय से तैनात की गई हैं। ये टीमें राजघाट, दशाश्वमेध घाट, सिंधिया घाट, राजेन्द्र प्रसाद घाट, केदार घाट, अस्सी घाट, नमो घाट, गाय घाट, दरभंगा घाट और रविदास घाट सहित अन्य घाटों पर मौजूद हैं। सभी टीमों को मॉडर्न लाइफ-सेविंग इक्विपमेंट्स दिए गए हैं और गंगा नदी में वॉटर एम्बुलेंस भी तैनात की गई है ताकि किसी भी आपात स्थिति से तुरंत निपटा जा सके।

काशी से फैली देव दीपावली की रोशनी पूरे देश में

देव दीपावली सिर्फ वाराणसी तक सीमित नहीं रही है अब यह पूरे देश में आस्था और संस्कृति का प्रतीक बन चुकी है। प्रयागराज, मथुरा, अयोध्या सहित कई धार्मिक स्थलों पर इस पर्व को समान श्रद्धा के साथ मनाया जा रहा है। काशी की यह अलौकिक रात्रि एक बार फिर इस बात का प्रमाण है कि भारत की आध्यात्मिक परंपरा, आस्था और संस्कृति अब पूरी दुनिया को आलोकित कर रही है।

किसानों को 10 घंटे बिजली कटौती का आदेश रद्द, सीएम मोहन यादव का डांडिया नाच के साथ जोरदार स्वागत

(जीएनएस)।

मध्य प्रदेश के किसानों के चेहरे पर एक बार फिर मुस्कान लौट आई है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने किसानों की 10 घंटे से अधिक बिजली कटौती के विवादास्पद आदेश को निरस्त कर दिया, जिससे रबी फसल की सिंचाई पर संकट टल गया।

इस फैसले का स्वागत किसानों ने अनोखे अंदाज में किया - डांडिया नाच के साथ। बरखेड़ी सब-स्टेशन पर पहुंचे सैकड़ों किसानों ने नाच-गान के बीच मुख्यमंत्री को धन्यवाद दिया। समाजसेवी एमएस मेवाड़ा के नेतृत्व में यह धन्यवाद सभा बनी, जहां किसानों ने कहा, "यह आदेश निरस्त न होता तो हमारी गेहूं की फसल सूख जाती।

किसानों को 10 घंटे बिजली कटौती का आदेश रद्द

सीएम साहब ने हमारी पुकार सुनी।" यह घटना न केवल किसानों की खुशी को दशार्ती है, बल्कि राज्य सरकार की किसान हितैषी नीति को भी रेखांकित करती है। आइए, जानते हैं इस पूरे घटनाक्रम की पूरी दास्तां - आदेश की पृष्ठभूमि से लेकर डांडिया नाच के जश्न तक।

बिजली कटौती का संकटः 10 घंटे का आदेश जो किसानों की कमर तोड़ रहा था

मध्य प्रदेश में रबी सीजन की शुरूआत हो चुकी है, और गेहूं की फसल को पानी की सबसे ज्यादा जरूरत है। लेकिन 25 अक्टूबर 2025 को विद्युत वितरण कंपनी के चीफ इंजीनियर जैन साहब ने एक आदेश जारी किया, जिसमें किसानों को प्रतिदिन 10 घंटे से अधिक बिजली कटौती की अनुमति दी गई। इसका मतलब था कि सिंचाई के लिए ट्यूबवेल चलाने वाले किसानों को बारी-बारी से बिजली मिलेगी, लेकिन कुल मिलाकर 10 घंटे से ज्यादा कटौती हो सकती है। यह आदेश ऊर्जा संकट और लोड शेडिंग का हवाला देकर जारी किया गया था,

लेकिन किसानों के लिए विनाशकारी साबित हो रहा था।

किसान संगठनों ने तुरंत विरोध जताया। भोपाल, इंदौर, उज्जैन और ग्वालियर संभागों में सैकड़ों किसान सड़कों पर उतर आए। एक किसान ने बताया, "गेहूं की फसल नवंबर-दिसंबर में पानी के बिना सूख जाती। 10 घंटे कटौती से पंप 4-5 घंटे ही चल पाते, पानी की रिले नहीं हो पाती। हमारी मेहनत बर्बाद हो रही थी।" विशेषज्ञों के अनुसार, मध्य प्रदेश में 25 लाख से अधिक ट्यूबवेल हैं, जो 70% सिंचाई पर निर्भर। आदेश से 5 लाख किसान प्रभावित हो रहे थे। किसान नेता अनिल यादव ने कहा, "यह आदेश किसान विरोधी था। बिजली कंपनी ने बिना सोचे जारी किया।"

विपक्ष ने भी सरकार पर निशाना साधा। कांग्रेस नेता जीतू पटवारी ने ट्वीट किया, "किसान पहले ही कर्ज के बोझ तले दबे हैं, ऊपर से बिजली कटौती। भाजपा सरकार सो रही है।" किसान संगठन भारतीय किसान संघ (इडर) ने धरना दिया और मुख्यमंत्री को ज्ञापन सौंपा।

मुख्यमंत्री का त्वरित फैसलाः आदेश निरस्त, किसानों की पुकार सुनी

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने किसानों की चिंता को गंभीरता से लिया। 3 नवंबर 2025 को उन्होंने ऊर्जा विभाग को निर्देश दिए कि 10 घंटे कटौती का आदेश तुरंत निरस्त हो। एक प्रेस रिलीज में कहा गया, "किसानों की फसल सुरक्षित रखना सरकार की प्राथमिकता है। बिजली कटौती न्यूनतम रखी जाएगी, और सिंचाई के लिए प्राथमिकता मिलेगी।" यह फैसला चीफ इंजीनियर जैन साहब के आदेश को पूरी तरह रद्द करता है। अब किसानों को 24७7 बिजली की गारंटी नहीं, लेकिन कटौती 6-8 घंटे तक सीमित रहेगी, और रोटेशनल शेडिंग से बचाव होगा।

सीएम यादव ने कहा, "मध्य प्रदेश किसान राज्य है। हमारी सरकार ने 2023 से ही किसानों के लिए 24 घंटे बिजली का वादा किया था। कटौती संकट से थी, लेकिन किसानों का नुकसान नहीं होने देंगे।" ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने भी कहा, "नए सोलर प्लांट्स से लोड मैनेजमेंट होगा। किसानों को राहत मिलेगी।" यह फैसला राज्य के 1.5 करोड़ किसानों के लिए बड़ी राहत है, खासकर मालवा-निमाड़ और बुंदेलखंड क्षेत्रों में।

बरखेड़ी सब-स्टेशन पर जश्नः डांडिया नाच के साथ धन्यवाद, किसानों की अनोखी अभिव्यक्ति

आदेश निरस्त होते ही भोपाल के बरखेड़ी क्षेत्र में किसानों ने खुशी का इजहार अनोखे तरीके से किया। समाजसेवी एमएस मेवाड़ा के नेतृत्व में सैकड़ों किसान बिजली ऑफिस और बरखेड़ी सब-स्टेशन पर पहुंचे। उन्होंने डांडिया नाच किया - गरबा स्टाइल में डंडियों की थाप पर नाचे, मुख्यमंत्री का नाम लेते हुए नारे लगाए। "मोहन भाई जिंदाबाद, किसान हितैषी जिंदाबाद!" के स्वर गूंजे। किसानों ने बैनर लहराए, "सीएम साहब, आपने हमारी फसल बचाई। धन्यवाद!"

एमएस मेवाड़ा ने बताया, "किसान दुखी थे, लेकिन सीएम ने एक झटके में राहत दी। डांडिया नाच हमारी सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है - खुशी का प्रतीक।" एक किसान ने कहा, "10 घंटे कटौती से रातें जागते काट रहे थे। अब गेहूं हरा रहेगा।" सब-स्टेशन पर धन्यवाद सभा हुई, जहां किसानों ने सीएम को पत्र लिखा।

किसानों की मुसीबतेंः सिंचाई संकट से फसल बबार्दी का खतरा टला,

इस आदेश से किसानों को कितना नुकसान हो रहा था?

सिंचाई प्रभावः गेहूं को नवंबर-फरवरी में 4-5 सिंचाई की जरूरत। 10 घंटे कटौती से पंप 2-3 घंटे चलते, पानी की कमी से 20-30% उपज घट सकती।

आर्थिक नुकसानः एक एकड़ गेहूं से 40-50 क्विंटल, 2,425 टरढ पर 1 लाख की कमाई। नुकसान से 20,000-30,000 का घाटा।

क्षेत्रीय प्रभावः भोपाल, सीहोर, रायसेन, विदिशा में 2 लाख ट्यूबवेल प्रभावित।

किसान नेता ने कहा, "जैन साहब का आदेश बिना सोचे था। सीएम ने सुना, निरस्त किया।" ऊर्जा विभाग ने अब नई गाइडलाइंस जारी की - कटौती 8 घंटे तक, किसानों को प्राथमिकता।

सरकार की प्रतिबद्धताः किसान हित में बिजली सुधार, सोलर और सब्सिडी

दूरसंचार विभाग ने ईएसटीआईसी 2025 में भारत के दूरसंचार नवाचार और 6G विजन को प्रदर्शित करते हुए 'डिजिटल संचार' पर विषयगत सत्र की अध्यक्षता की

ईएसटीआईसी 2025 के सचिव (दूरसंचार): "दूरसंचार सभी प्रौद्योगिकियों को सक्षम बनाने वाला और भारत के विकास का चालक है"

नवाचार, शिक्षा-उद्योग सहयोग और अनुसंधान-आधारित विकास के माध्यम से विकसित भारत 2047 की ओर भारत की यात्रा में दूरसंचार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा: सचिव (दूरसंचार)

भविष्य के लिए और 6ॠ अनुसंधान एवं विकास पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए भारत में 100 5ॠ प्रयोगशालाएँ स्थापित की गईं

भारत 6G गठबंधन ने 10 वैश्विक साझेदारियाँ की, 2030 तक दुनिया भर के 6G पेटेंट का 10% लक्ष्य रखा

(जीएनएस)।

दूरसंचार विभाग (डीओटी) ने 3-5 नवंबर, 2025 तक भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित उभरते विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार सम्मेलन (ईएसटीआईसी) 2025 में भाग लिया। प्रमुख आयोजकों में से एक के रूप में, दूरसंचार विभाग ने 5 नवंबर, 2025 को 'डिजिटल संचार' पर विषयगत सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र की अध्यक्षता दूरसंचार सचिव और डिजिटल संचार आयोग के अध्यक्ष डॉ. नीरज मित्तल ने की और इसमें भारत के दूरसंचार और डिजिटल नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र के प्रमुख शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों और उद्योग जगत के नेताओं ने भाग लिया। इस सत्र में दूरसंचार विभाग के उप महानिदेशक और आईईजी डब्लूटीपीएफ, आईटीयू, के उपाध्यक्ष श्री अशोक कुमार भी शामिल हुए।

डॉ. नीरज मित्तल ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि दूरसंचार न केवल अर्थव्यवस्था का बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में विकसित हो रही सभी तकनीकों का भी एक सशक्त माध्यम बन गया है। कनेक्टिविटी की परिवर्तनकारी शक्ति

और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के तेजी से विकास का उल्लेख करते हुए, उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र हम सभी के लिए असंभव को संभव बनाने का एक नया अवसर प्रस्तुत करता है।

डॉ. मित्तल ने इस बात पर जोर दिया कि कनेक्टिविटी सभी उत्पादक गतिविधियों का आधार है और भारत की दूरसंचार क्रांति का राष्ट्रीय आर्थिक विकास पर सीधा प्रभाव पड़ता है। उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण के मार्गदर्शन में भारत ने वैश्विक स्तर पर सबसे तेज 5G रोलआउट में से एक हासिल किया है, और देश भर में 100 5G प्रयोगशालाएँ स्थापित की गई हैं ताकि उपयोग के मामले विकसित किए जा सकें और देश को 6ॠ तकनीकों में नेतृत्व के लिए तैयार किया जा सके।

दूरसंचार सचिव ने उल्लेख किया कि अगली पीढ़ी के संचार के प्रति सरकार का दृष्टिकोण बहुआयामी है, जो अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देता है, घरेलू विनिर्माण को प्रोत्साहित करता है और शिक्षा जगत, उद्योग एवं सरकार के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। उन्होंने बताया कि वर्तमान में 6G के लिए 100 से ज्यादा अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं को समर्थन दिया जा रहा है, जिनका मुख्य उद्देश्य ओपन आरएएन, स्वदेशी चिपसेट, कृत्रिम बुद्धिमता एआई-आधारित इंटेलिजेंट नेटवर्क और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए नियामक सैंडबॉक्स को आगे बढ़ाना है।

डॉ. मित्तल ने भारत 6जी एलायंस के बारे में भी बात की, जो प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण से प्रेरित एक अग्रणी पहल है। इसने पहले ही वैश्विक 6जी निकायों के साथ 10 अंतर्राष्ट्रीय सहयोगों पर हस्ताक्षर किए हैं और इसका लक्ष्य है कि भारत 2030 तक दुनिया भर में 6जी पेटेंट में 10% का योगदान दे।

"भारत के लिए 6G विजन को कैसे साकार करें" इस विषय पर मुख्य व्याख्यान आईआईटी हैदराबाद के इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रो. किरण कुमार कुची और वाईसिग नेटवर्क्स के संस्थापक ने दिया। इस सत्र में लेखा वायरलेस सॉल्यूशंस, बेंगलुरु के संस्थापक एवं निदेशक श्री रामू श्रीनिवासैया ने "निजी नेटवर्क की पुनर्कल्पनाः 6G नेटवर्क डिजाइन में ओआरएएन ORAN की बढ़ती भूमिका" विषय पर और तेजस नेटवर्क्स, बेंगलुरु के सह-संस्थापक एवं मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी डॉ. कुमार एन. शिवराजन ने "2030 तक भारत को वैश्विक दूरसंचार क्षेत्र में अग्रणी बनाना" विषय पर व्याख्यान दिए।

सी-डॉट के सीईओ डॉ. राजकुमार उपाध्याय ने "स्वदेशी प्रौद्योगिकियों को अगले स्तर तक ले जाना" विषय पर एक पैनल चर्चा का संचालन किया जिसमें आईआईटी मद्रास, चेन्नई के इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर राधाकृष्ण गंती, आईआईएससी बेंगलुरु के ईसीई विभाग के प्रोफेसर पंगनमाला विजय कुमार, बीएसएनएल, नई दिल्ली के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री ए. रॉबर्ट जेरार्ड रवि, और तेजस नेटवर्क्स के प्रमुख वैज्ञानिक एवं कार्यकारी उपाध्यक्ष तथा सांख्य लैब्स के पूर्व सीईओ डॉ. पराग नाइक ने भाग लिया।

पैनल ने भारत में 5ॠ पारिस्थितिकी तंत्र का विस्तार करने, एनएआईसी अल1 NavIC L1 सिग्नल के माध्यम से स्वदेशी पीएनटी PNT को आगे बढ़ाने और डी2एम D2M से 6G तक विघटनकारी प्रौद्योगिकी स्टैक बनाने पर विचार किया।

'विकसित भारत 2047 - सतत नवाचार, तकनीकी उन्नति और सशक्तिकरण में अग्रणी' विषय पर ईएसटीआईसी एरळक्ड 2025 का उद्घाटन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 3 नवंबर, 2025 को किया। यह भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार के मार्गदर्शन में भारत सरकार के 13 मंत्रालयों और विभागों द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया जा रहा है।

RNI No.: UPHIN/25/A1697 Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By SUSHILA SHUKLA at Krishna Printiers, 271/31 Chakmaki Dugawa, Rajendranagar, Lucknow-226018, Uttar Pradesh.
and Published from 538 GHA/85 Pataurganj, Near Janki Prasad Dharmshala, Sitapur Road, Niralanagar, Lucknow-226020, Uttar Pradesh. Editor : ASHWANI KUMAR

19 नवंबर की पोरबंदर-शालीमार सुपरफास्ट ट्रेन सांतरागाछी स्टेशन तक जाएगी

रेलवे प्रशासन द्वारा शालीमार स्टेशन पर यार्ड रिमॉडलिंग से संबंधित इंजीनियरिंग कार्य किए जाने के कारण 19 नवम्बर , 2025 को पोरबंदर से प्रस्थान करने वाली पोरबंदर-शालीमार सुपरफास्ट ट्रेन शालीमार की जगह सांतरागाछी स्टेशन तक जाएगी। इसी प्रकार, 21 नवंबर, 2025 को शालीमार से चलने वाली ट्रेन संख्या 12906 शालीमार-पोरबंदर सुपरफास्ट शालीमार की जगह सांतरागाछी स्टेशन से ही प्रारंभ होगी। विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www. enquiry. indianrail. gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

पश्चिम रेलवे के स्थापना दिवस पर रंग बिरंगी रोशनी से सजे वडोदरा मंडल के स्टेशन भवन

5 नवम्बर, 2025 को पश्चिम रेलवे ने अपना 75वां स्थापना दिवस मनाया। अपनी शुरूआत के बाद से पश्चिम रेलवे ने राष्ट्र की सेवा में अपनी 70 से अधिक वर्षों की यात्रा में कई मील के पत्थर हासिल किए हैं। इस अवसर पर वडोदरा मंडल के प्रधान कार्यालय सहित मंडल की सभी प्रमुख स्टेशन बिल्डिंगों वडोदरा, एकतानगर, प्रतापनगर, मकरपुरा, डभोई आदि स्टेशनो को रंग बिरंगी रोशनी से सजाया गया।

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार बॉम्बे, बड़ौदा और सेंट्रल इंडिया रेलवे कंपनी (बीबी एंड सीआई) का गठन 1855 में किया गया था, जिसकी शुरूआत गुजरात राज्य में पश्चिमी तट पर अंकलेश्वर से उत्राण तक 29 मील ब्रॉड गेज ट्रैक के निर्माण के साथ हुई थी एवं इसका मुख्यालय सूरत में था। उसी वर्ष 21 नवम्बर, 1855 को कंपनी ने ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ सूरत से बड़ौदा और अहमदाबाद तक एक रेलवे लाइन बनाने के लिए एक समझौता किया। इस के साथ ही पश्चिमी बंदरगाह में गुजरात में पैदा की जाने वाली कपास की भरपूर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए उत्राण (सूरत के उत्तर) से तत्कालीन बॉम्बे तक एक लाइन शुरू करने के लिए एक और अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए थे। इसके अगले वर्ष लाइन पर काम शुरू हुआ और उत्राण से बॉम्बे में ग्रांट रोड स्टेशन तक की लाइन को आधिकारिक तौर पर 28 नवम्बर, 1864 को खोला गया जिसके द्वारा मुंबई में पश्चिमी लाइन की शुरूआत हुई।

श्री सक्सेना ने आगे बताया कि अपने वर्तमान स्वरूप में पश्चिम रेलवे 5 नवम्बर, 1951 को अपनी अग्रदूत, तत्कालीन बॉम्बे, बड़ौदा और सेंट्रल इंडिया रेलवे कंपनी (बीबी और सीआई) के अन्य स्टेट रेलवे जैसे सौराष्ट्र, राजपुताना और जयपुर के साथ विलय से अस्तित्व में आयी। 1850 के दशक में ब्रिटिश काल में अपने जन्म के बाद से पश्चिम रेलवे ने अपनी लंबी यात्रा में बार-बार अपनी श्रेष्ठता साबित की है।

पोरबंदर-सिकंदराबाद एक्सप्रेस ट्रेन को लिंगमपल्ली स्टेशन पर अस्थायी ठहराव की सुविधा

त्योहारों के दौरान यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए तथा भीड़ प्रबंधन के उद्देश्य से रेल प्रशासन द्वारा लिंगमपल्ली (छढक) स्टेशन पर कुछ ट्रेनों का अस्थायी ठहराव प्रदान किया गया है। यह सुविधा आगामी 06 माह की अवधि के लिए, तत्काल प्रभाव से 30 अप्रैल, 2026 तक लागू रहेगी।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि इस अवधि में निम्नलिखित ट्रेनें लिंगमपल्ली स्टेशन पर अस्थायी रूप से ठहरेंगी –

1. ट्रेन संख्या 20967 सिकंदराबाद-पोरबंदर एक्सप्रेस लिंगमपल्ली स्टेशन पर आगमन/प्रस्थान समय - 15.39/15.40 बजे
2. ट्रेन संख्या 20968 पोरबंदर-सिकंदराबाद एक्सप्रेस लिंगमपल्ली स्टेशन पर आगमन/प्रस्थान समय - 06.14/06.15 बजे

यह अस्थायी ठहराव यात्रियों की सुविधा के दृष्टिगत किया गया है, जिससे क्रिसमस, नववर्ष एवं संक्रांति पर्वों के दौरान बढ़ने वाली भीड़ का प्रभावी प्रबंधन सुनिश्चित किया जा सके। इस निर्णय से यात्रियों को लिंगमपल्ली स्टेशन से यात्रा करने में सुगमता एवं सुविधा प्राप्त होगी।

महेसाणा स्टेशन का पुनर्विकास कार्य तेजी से प्रगति पर

यात्रियों को मिलेगी अत्याधुनिक सुविधाएँ और बेहतर यात्रा अनुभव

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल पर महेसाणा रेलवे स्टेशन का अमृत भारत स्टेशन योजना (अइरर) के तहत पुनर्विकास तेजी से किया जा रहा है। इस योजना का उद्देश्य स्टेशन को न केवल यात्रियों के लिए विश्वस्तरीय सुविधाओं से सुसज्जित करना है, बल्कि इसे शहर के विकास, कनेक्टिविटी और आर्थिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र भी बनाना है। पुनर्विकास के बाद मेहसाणा स्टेशन एक मल्टीमॉडल ट्रांजिट हब के रूप में उभरेगा, जहाँ आधुनिकता, सुविधा और सौंदर्य का सुंदर संगम दिखाई देगा।

◆ नया स्टेशन भवन (पूर्व दिशा) - निमार्णाधीन

● महेसाणा स्टेशन के पूर्व दिशा में स्थित नए स्टेशन भवन का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। भवन के फसाड का सौंदर्यीकरण किया जा रहा है, जिससे स्टेशन का बाहरी दृश्य अधिक आधुनिक और आकर्षक लगेगा।

● सकुर्लेटिंग एरिया पोर्च, वेटिंग रूम, बुकिंग ऑफिस, टिकट चेकिंग स्टाफ ऑफिस, पूछताछ कार्यालय और वाहन संचालन हेतु सुचारु व्यवस्थाएँ शामिल होंगी।

● अधिकारियों के लिए विश्रामगृह, 03 रिटायरिंग रूम, डॉर्मिटरी, सीसीटीवी निगरानी प्रणाली, और स्वच्छ शौचालयों की व्यवस्था भी की जा रही है ताकि यात्रियों और रेलवे कर्मचारियों दोनों को सुविधा मिल सके।

◆ प्रमुख कार्य एवं प्रगति की स्थिति

मुख्य प्रवेश द्वार पर टू-व्हीलर और फोर-व्हीलर पार्किंग का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है।

दूसरे प्रवेश द्वार के स्टेशन भवन में बुकिंग ऑफिस तथा एसी/नॉन-एसी वेटिंग हॉल का कार्य प्रगति पर है।

यात्रियों की सुरक्षित आवाजाही के लिए 40 फीट चौड़ा रूफ प्लाजा बनाया जा रहा है, जो स्टेशन के दोनों ओर सुगम कनेक्टिविटी प्रदान करेगा। यह रानी कमलापती स्टेशन पर बनाए गए रूफ प्लाजा के अनुभव के आधार पर बनाया जा रहा है।

प्लेटफॉर्म 4 एवं 5 पर शेल्टर निर्माण का कार्य पूरा हो चुका है, और इन्हें दिव्यांगजन-अनुकूल बनाया गया है।

◆ आधुनिक यात्री सुविधाएँ

महेसाणा स्टेशन के पुनर्विकास के बाद यात्रियों को अनेक सुविधाजनक एवं अत्याधुनिक सुविधाएँ प्राप्त होंगी।

कुल 08 प्लेटफॉर्म और 12 रेल लाइनें, जिनमें से 02 डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (DFC) के लिए आरक्षित हैं।

स्टेशन पर 02 फुट ओवर ब्रिज और 04 लिफ्ट्स का निर्माण किया जा रहा हैं।

यात्रियों के आराम हेतु एसी, नॉन-एसी और महिला प्रतीक्षालय बनाए जा रहे हैं।

प्रत्येक प्लेटफॉर्म पर 28-28 स्टेनलेस स्टील बेंच लगाई जा रही हैं, साथ ही कोच गाइडेंस सिस्टम प्लेटफॉर्म नं. 1, 4/5 और 6/7 पर लगाए जा रहे है।

यात्रियों की सुविधा के लिए फूड प्लाजा, वन स्टेशन वन प्रोडक्ट स्टॉल, जन औषधि केंद्र, एटीएम, एटीवीएम, लगेज ट्रॉली तथा व्हीलचेयर की व्यवस्था की जा रही है।

स्टेशन परिसर में हाइ-रिजॉल्यूशन सीसीटीवी कैमरे लगाए जा रहे हैं ताकि सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

डॉर्मिटरी, रिटायरिंग रूम, बुकिंग ऑफिस और पूछताछ केंद्र का आधुनिकीकरण किया गया है।

यात्रियों को एक अनोखा अनुभव प्रदान करने के लिए 'रेस्टोरेंट ऑन व्हील्स' की स्थापना की योजना भी प्रस्तावित है।

◆ ट्रेनों का संचालन एवं यातायात

महेसाणा स्टेशन पश्चिम रेलवे का एक प्रमुख स्टेशन है जहाँ—

प्रतिदिन 38 सुपरफास्ट, 23 मेल/एक्सप्रेस तथा 10 लोकल ट्रेनें रुकती हैं।

06 ट्रेनें मेहसाणा से आरंभ होती हैं।

प्रतिदिन लगभग 12,000 यात्री इस स्टेशन से यात्रा करते हैं।

◆ यात्रियों एवं क्षेत्र के लिए लाभ

महेसाणा स्टेशन के पुनर्विकास से यात्रियों को सुरक्षित, स्वच्छ और आधुनिक यात्रा अनुभव प्राप्त होगा। स्टेशन परिसर में विकसित की जा रही नई सुविधाएँ स्थानीय व्यापार, पर्यटन और रोजगार को भी बढ़ावा देंगी। इस परियोजना से शहर और आसपास के क्षेत्रों को बेहतर रेल कनेक्टिविटी प्राप्त होगी, जिससे क्षेत्रीय विकास को नई गति मिलेगी।

महेसाणा स्टेशन का यह कायाकल्प स्थानीय निवासियों के लिए आर्थिक प्रगति, सुविधा और गर्व का नया अध्याय सिद्ध होगा, जो 'नए भारत के आधुनिक रेलवे स्टेशन' की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

19 नवंबर को पोरबंदर से चलने वाली पोरबंदर-शालीमार सुपरफास्ट ट्रेन सांतरागाछी जं. स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी

रेलवे प्रशासन द्वारा शालीमार स्टेशन पर यार्ड रिमॉडलिंग से संबंधित इंजीनियरिंग कार्य किए जाने के कारण पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल से चलने वाली पोरबंदर-शालीमार सुपरफास्ट ट्रेन को सांतरागाछी जं. स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट एवं शॉर्ट ओरिजिनेट किया जाएगा।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि —

ᛀ 19 नवंबर, 2025 को पोरबंदर से चलनवे वाली ट्रेन संख्या 12905 पोरबंदर-शालीमार सुपरफास्ट की यात्रा सांतरागाछी जं. स्टेशन पर ही समाप्त होगी।

ᛀ इसी प्रकार, 21 नवंबर, 2025 को शालीमार से चलने वाली ट्रेन संख्या 12906 शालीमार-पोरबंदर सुपरफास्ट की यात्रा सांतरागाछी जं. स्टेशन से ही प्रारंभ होगी।

भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने यात्रियों से अनुरोध किया है कि वे उक्त तिथियों में अपनी यात्रा से पूर्व गाड़ियों की स्थिति एवं समय संबंधी नवीनतम जानकारी के लिए ठळएर ऐप अथवा भारतीय रेल की आधिकारिक वेबसाइट से जानकारी प्राप्त करें।

आरक्षित यात्रियों को इस परिवर्तन की सूचना रटर अलर्ट के माध्यम से प्रदान की जाती है। रेलवे प्रशासन यात्रियों से सहयोग की अपील करता है एवं किसी भी असुविधा के लिए खेद व्यक्त करता है।

रेलवे के पेंशनर / पारिवारिक पेंशनर 30 नवम्बर 2025 तक जीवन प्रमाणपत्र अनिवार्य रूप से जमा कराएं

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वित्त प्रबंधक श्री मोहित पंचाल ने जानकारी दी है कि रेलवे के सभी पेंशनरों एवं पारिवारिक पेंशनरों को अपना जीवन प्रमाणपत्र दिनांक 30 नवम्बर 2025 तक अनिवार्य रूप से जमा कराना आवश्यक है।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि पेंशनरों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए तथा बैंकों में लंबी कतारों और वृद्ध पेंशनरों को होने वाली असुविधा से बचाने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा 'जीवन प्रमाण (खीींप्ल्ल ढर्ॅल्ल)' नामक एक डिजिटल एप्लिकेशन विकसित किया गया है। इस एप्लिकेशन के माध्यम से पेंशनर अपने घर बैठे ही डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र जमा कर सकते हैं तथा प्रमाणपत्र की प्रति ऑनलाइन प्राप्त कर सकते हैं।

यदि किसी पेंशनर को डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र जमा करने में किसी प्रकार की कठिनाई आती है, तो वे सहायता हेतु भावनगर परा स्थित मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय के लेखा विभाग से संपर्क कर सकते हैं।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने सभी पेंशनरों एवं पारिवारिक पेंशनरों से अनुरोध किया है कि वे अपना जीवन प्रमाणपत्र निर्धारित तिथि तक जमा कराएं, ताकि पेंशन भुगतान में कोई बाधा न आए।

गिरनार परिक्रमा पर रोक की वजह से वेरावल-गांधीग्राम स्पेशल ट्रेन निरस्त

जूनागढ़ में लगने वाले परिक्रमा मेले पर स्थानीय प्रशासन द्वारा रोक लगाए जाने के कारण पश्चिम रेलवे द्वारा भावनगर मंडल के वेरावल-गांधीग्राम के बीच चलने वाली वेरावल-गांधीग्राम स्पेशल ट्रेन को निरस्त कर दिया गया है।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया की इस स्पेशल ट्रेन की सेवाएं 11 नवंबर, 2025 तक उपलब्ध होनी थी, परन्तु अब इस सुविधा को तत्काल प्रभाव से (05 नवंबर, 2025 से) निरस्त करने का निर्णय लिया गया है।

निरस्त की जाने वाली ट्रेनेः

1. ट्रेन संख्या 09226 (वेरावल-गांधीग्राम)
2. ट्रेन संख्या 09225 (गांधीग्राम-वेरावल)

यात्रियों से अनुरोध है कि यात्रा की योजना बनाते समय उक्त परिवर्तनों पर ध्यान दें। असुविधा के लिए रेलवे प्रशासन खेद व्यक्त करता है।

प्रतिबंधित कफ सिरप की 15.7 लाख शीशियां जब्त, 8 गिरफ्तार

(जीएनएस)।

उत्तर प्रदेश में नशीली दवाओं के अवैध कारोबार पर पुलिस की सबसे बड़ी कार्रवाई में गाजियाबाद क्राइम ब्रांच ने दिल्ली-मेरठ रोड पर एक गोदाम से 15.7 लाख से ज्यादा प्रतिबंधित कफ सिरप की शीशियां जब्त कीं। बुधवार (5 नवंबर 2025) को खुलासा हुआ कि चार ट्रकों में छिपाकर रखी गई यह खेप चूना पत्थर की आड़ में इंदौर से गुवाहाटी भेजी जा रही थी, लेकिन असल मकसद बांग्लादेश में तस्करी था।

इस अंतरराज्यीय रैकेट में 8 लोगों को गिरफ्तार किया गया, जिनमें दवा व्यापारियों के संगठन का कैशियर भी शामिल है। जब्त माल का बाजार मूल्य करीब 3.4 करोड़ रुपये है। सोनभद्र पुलिस की टिप पर नंदग्राम थाने और क्राइम ब्रांच की संयुक्त टीम ने 'मछली गोदाम' पर छापा मारा।

अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (क्राइम) केशव कुमार चौधरी ने बताया, 'घूकना मोड़ के पास बैरली-गोरखपुर ट्रांसपोर्ट के गोदाम में रातों-रात छापा मारा। चार ट्रकों से 1,150 कार्टन (15,73,500 शीशियां) बरामद हुईं-850 कार्टन एस्कुफ, 300 फेंसेडिल और बाकी टेपेंटाडोल। ये कोडीन-बेस्ड सिरप नशे के लिए इस्तेमाल होते हैं, जो NDPS एक्ट के तहत बैन हैं।' खेप चूना पत्थर की बोरियों के नीचे छिपाई गई थी। ट्रक ड्राइवरों ने इंदौर से 'चूना पत्थर' लोडिंग का बहाना बनाया, लेकिन असल में यह पूर्वोत्तर राज्यों होते हुए बांग्लादेश के लिए थी।

सोनभद्र पुलिस ने हाल ही में इसी रूट से एक खेप पकड़ी थी, जिसकी टिप पर गाजियाबाद टीम अलर्ट हुई। चौधरी ने कहा, 'हिमाचल प्रदेश के बद्दी में एबॉट फार्मा ने दिसंबर 2024 में फेंसेडिल का प्रोडक्शन बंद कर दिया, फिर भी अवैध उत्पादन जारी।' जब्ती में 20 लाख नकद, हुंडई क्रेटा कार, 2 लैपटॉप, 7 रबर स्टैंप, 10 फर्जी सिम कार्ड और जाली दस्तावेज भी मिले।

गिरफ्तार आरोपीः दवा एसोसिएशन का कैशियर मास्टरमाइंड, ठउफ से बांग्लादेश तक सप्लाई

पकड़े गए 8 आरोपीः सौरभ त्यागी (37, कैशियर, गाजियाबाद केमिस्ट्स एंड ड्रगिस्ट्स एसोसिएशन), शादाब (29), शिवकांत (32), संतोष भड़ाना (32, ट्रांसपोर्टर), अंबुज (26), धर्मेंद्र (49), दीपू यादव (24) और सुशील यादव (35)। पूछताछ में त्यागी और भड़ाना मुख्य संचालक निकले-त्यागी ने दवा कंपनियों के कनेक्शन से सप्लाई की, जबकि भड़ाना गोदाम मुहैया कराता था। चौधरी ने बताया, 'ये ठउफ यूपी-बिहार, पूर्वोत्तर और बांग्लादेश तक नेटवर्क फैलाते थे। त्यागी का मेडिकल स्टोर कवर था।'

पुलिस ने NDPS एक्ट, IPC की धारा 420 (धोखाधड़ी) और 120इ (षड्यंत्र) के तहत केस दर्ज किया। आरोपी रिमांड पर हैं-और गिरफ्तारियां हो सकती हैं।

नशीले सिरप का खतराः युवाओं में बढ़ता नशा, सरकार का सख्त रुख

ये कोडीन-बेस्ड सिरप मूल रूप से खांसी के लिए थे, लेकिन अब नशे के रूप में युवाओं में पॉपुलर। केंद्र सरकार ने 2023 में इनकी बिक्री बैन की, लेकिन अवैध उत्पादन जारी। गाजियाबाद जैसे शहरों में दवा दुकानों से लीक होता है। चौधरी ने चेतावनी दी, 'यह नेटवर्क युवाओं को बर्बाद कर रहा। हम अंतरराज्यीय जांच बढ़ाएंगे।' हाल के महीनों में यूपी में कई ऐसी जब्तियां हुईं-सोनभद्र (अक्टूबर 2025, 1.19 लाख बोतलें, ₹3 करोड़), रांची (नवंबर 2025, 13,400 बोतलें, ₹30 लाख)।

यह कार्रवाई ड्रग तस्करी पर पुलिस की सतर्कता दिखाती है। जनता से अपीलः संदिग्ध खेप की सूचना दें। ईश्वर युवाओं को नशे से बचाए! अपडेट्स के लिए फॉलो करें।

गया में 'हम' विधायक और प्रत्याशी ज्योति मांझी पर हुआ जानलेवा हमला

(जीएनएस)।

बिहार विधानसभा चुनाव के गहमागहमी भरे माहौल के बीच गया जिले से एक चौंकाने वाली खबर सामने आई है। बाराचट्टी विधानसभा क्षेत्र से हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (सेक्युलर) की उम्मीदवार और वर्तमान विधायक ज्योति मांझी पर बुधवार शाम जानलेवा हमला किया गया। इस हमले में वो गंभीर रूप से घायल हो गई हैं और उन्हें अस्पताल में भर्ती करवाया गया है।

5 नवंबर को ये घटना गया के मायापुर सुलेबट्टा इलाके में उस वक्त हुई, जब वह खुली गाड़ी में सवार होकर चुनाव प्रचार कर रही थीं। इस हमले ने चुनावी माहौल में तनाव बढ़ा दिया है और प्रशासन पर चुनाव के दौरान सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत करने का दबाव बढ़ गया है।

अचानक कुछ असामाजिक तत्वों ने उनकी गाड़ी पर ईंट-पत्थर फेंकने शुरू कर दिए। एक पत्थर सीधे ज्योति मांझी के सीने पर लगा, जिससे वह घायल हो गईं। उन्हें तुरंत स्थानीय अस्पताल ले जाया गया, जहां उनकी हालत अब स्थिर बताई जा रही है। इस हमले से इलाके में हड़कंप मच गया और उनके समर्थकों ने तुरंत उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया।

घटना की जानकारी मिलते ही स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची और मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस हमलावरों की पहचान और गिरफ्तारी के लिए गहन प्रयास कर रही है। सत्ताधारी गठबंधन की प्रत्याशी पर हुए इस हमले ने चुनावी सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

कौन हैं ज्योति मांझी?

ज्योति मांझी, केंद्रीय मंत्री और 'हम' पार्टी के संस्थापक जीतन राम मांझी की समधन हैं, जो उन्हें बिहार की राजनीति के एक प्रभावशाली परिवार से जोड़ता है। जीतन राम मांझी ने इस हमले की कड़ी निंदा करते हुए इसे लोकतंत्र पर हमला बताया है और दोषियों की तत्काल गिरफ्तारी की मांग की है।

राजनीतिक रूप से ज्योति मांझी बाराचट्टी में एक मजबूत चेहरा मानी जाती हैं। उन्होंने 2020 के विधानसभा चुनाव में इसी सीट से राजद उम्मीदवार समता देवी को हराकर जीत हासिल की थी, जबकि यह क्षेत्र पारंपरिक रूप से राजद का गढ़ रहा है। इस बार भी वह एनडीए समर्थित 'हम' की उम्मीदवार के रूप में मैदान में हैं।

समुद्री सूचना के साझाकरण कार्यशाला का तीसरा संस्करण समुद्री सुरक्षा संगोष्ठी गुरुग्राम, भारत

गुरुग्राम में आईएफसी-आईओआर द्वारा आयोजित तीन दिवसीय एमआईएसडब्ल्यू-25 में 30 देशों के 57 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, ताकि केंद्रित विचार-विमर्श और स्वदेशी मंत्रा सॉफ्टवेयर का उपयोग करके एक व्यावहारिक टेबल-टॉप अभ्यास से वास्तविक समय समन्वय, अंतर-संचालन और सूचना साझाकरण को बढ़ाया जा सके

(जीएनएस)।

समुद्री सूचना साझाकरण कार्यशाला (एमआईएसडब्ल्यू-25) 25 के एक भाग के रूप में आयोजित समुद्री सुरक्षा संगोष्ठी 4 नवंबर 25 को संपन्न हुई । "हिंद महासागर क्षेत्र में वास्तविक समय समन्वय और सूचना साझाकरण को बढ़ाना" विषय पर चल रही तीन दिवसीय कार्यशाला (3-5 नवंबर 25) का आयोजन आईएफसी- आईओआर द्वारा किया जा रहा है और इसमें 30 देशों के 57 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया है, जिनमें आईओआरए , डीसीओसी/जेए और बीम्सटेक के प्रतिनिधि शामिल हैं ।

सेमिनार की शुरूआत नौसेना उप प्रमुख वाइस एडमिरल तरुण सोबती के उद्बोधन से हुआ, जिन्होंने हिंद महासागर क्षेत्र में उभरती समुद्री चुनौतियों से निपटने के लिए सहयोग, अंतर-संचालन और विश्वास-आधारित साझेदारी के महत्व पर जोर दिया। इसके बाद, नौवहन महानिदेशालय के अतिरिक्त महानिदेशक, श्री सुशील मानसिंह खोपड़े, आईपीएस ने मुख्य भाषण दिया , जिसमें उन्होंने सहयोगात्मक सहभागिता और नियामक समन्वय के माध्यम से क्षेत्र की समुद्री सुरक्षा संरचना को मजबूत करने की दिशा में भारत की समुद्री पहलों और प्रयासों पर प्रकाश डाला।

सेमिनार के दो दिनों में, प्रतिभागियों ने समुद्री सुरक्षा परिदृश्य को आकार देने वाले विविध विषयों पर विचार-विमर्श किया, जिनमें क्षेत्रीय सुरक्षा गतिशीलता, सूचना नेटवर्क की भूमिका, परिचालन समन्वय, समुद्री कानून, उद्योग के दृष्टिकोण और अंतरराष्ट्रीय समुद्री अपराध जैसे पहलू शामिल थे। सत्रों में एक सुदृढ़ और उत्तरदायी समुद्री सुरक्षा ढाँचे के निर्माण में तकनीकी एकीकरण, डेटा इंटरऑपरेबिलिटी और सामूहिक प्रतिबद्धता के महत्व पर जोर दिया गया। सेमिनार का समापन रियर एडमिरल निर्भय बापना (सीएस एनसीओ) के संबोधन के साथ हुआ , जिन्होंने क्षेत्रीय सूचना-साझाकरण ढाँचों के बीच तालमेल की आवश्यकता पर प्रकाश डाला और इस बात पर जोर दिया कि एक सुरक्षित समुद्री क्षेत्र सुनिश्चित करने के लिए सहयोग और निरंतर संवाद केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।

05 नवंबर 25 को, एमआईएसडब्ल्यू-25 में आईएफसी-आईओआर में एक टेबल टॉप एक्सरसाइज (टीटीएक्स) होगी, जहाँ सूचना साझाकरण, अंतरसंचालनीयता और समन्वित प्रतिक्रिया के सिद्धांतों को नकली समुद्री सुरक्षा परिदृश्यों के माध्यम से व्यवहार में लाया जाएगा। टीटीएक्स का संचालन स्वदेशी रूप से विकसित मैरीटाइम एनालिटिकल टूल फॉर रीजनल अवेयरनेस (मंत्रा) सॉफ्टवेयर पर किया जाएगा। प्रतिनिधियों को समुद्री डकैती की घटनाओं, नशीली दवाओं की तस्करी, अनियमित मानव प्रवास और समुद्र में संकट जैसे परिदृश्यों सहित नकली समुद्री स्थितियों का सामना करने का काम सौंपा जाएगा। अभ्यास बहु-एजेंसी समन्वय, त्वरित सूचना साझाकरण और समन्वित प्रतिक्रिया योजना पर केंद्रित होगा। अभ्यास का उद्देश्य सुसंगत समुद्री सुरक्षा परिणामों को पाने के लिए वास्तविक समय की सूचना साझाकरण को बेहतर करना है

एपीडा ने छत्तीसगढ़ से पापुआ न्यू गिनी को 20 मीट्रिक टन फोर्टिफाइड चावल निर्यात की सुविधा प्रदान की

(जीएनएस)।

भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) ने छत्तीसगढ़ से पापुआ न्यू गिनी (पीएनजी) को 20 मीट्रिक टन फोर्टिफाइड चावल के निर्यात की सुविधा दी।

यह खेप भारत के कृषि निर्यात पोर्टफोलियो को बढ़ाने और वैश्विक बाजारों में उच्च गुणवत्ता वाले, फोर्टिफाइड और मूल्यवर्धित खाद्य उत्पादों के एक विश्वसनीय आपूर्तिकर्ता के रूप में देश की प्रतिष्ठा को मजबूत करने के भारत के निरंतर प्रयासों में मील का एक और महत्वपूर्ण पत्थर है।

छत्तीसगढ़ राज्य ने चावल और फोर्टिफाइड चावल के निर्यात को प्रोत्साहन देने के लिए लगातार कठोर प्रयास किए हैं, जिससे राज्य के किसानों, मिल मालिकों और निर्यातकों को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में बेहतर दृश्यता और पहचान हासिल करने में मदद मिली है। पापुआ न्यू गिनी को फोर्टिफाइड चावल की सफल शिपमेंट वैश्विक पोषण-केंद्रित खाद्य आपूर्ति श्रृंखला में छत्तीसगढ़ के बढ़ते योगदान को रेखांकित करती है और भारत की कृषि-निर्यात महत्वाकांक्षाओं को आगे बढ़ाने में राज्य की उभरती भूमिका को दशार्ती है।

इस मौके पर, एपीडा अध्यक्ष श्री अभिषेक देव ने निर्यातक मेसर्स स्पॉन्ज एंटरप्राइजेज प्राइवेट लिमिटेड, रायपुर और इस उपलब्धि को हासिल करने में शामिल सभी हितधारकों की सराहना की। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ से फोर्टिफाइड चावल का सफल निर्यात अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों को प्रीमियम क्वालिटी, विज्ञान-आधारित और पोषण वाले खाद्य समाधान प्रदान करने में भारत की बढ़ती क्षमता का उदाहरण है। श्री देव ने वैश्विक कृषि-व्यापार इकोसिस्टम में भारत की स्थिति को और मजबूत करने के उद्देश्य से गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली, क्षमता बढ़ाने, मूल्य-श्रृंखला विकास और रणनीतिक बाजार संबंधों के माध्यम से निर्यातकों की सुविधा के लिए एपीडा की दृढ़ प्रतिबद्धता की पुष्टि की। द राइस एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन ऑफ छत्तीसगढ़ (टीआरईए-सीजी) अध्यक्ष श्री मुकेश जैन ने एपीडा के लगातार समर्थन और सुविधा के लिए आभार जताया। उन्होंने छत्तीसगढ़ से कृषि निर्यात को प्रोत्साहन देने और आगे बढ़ाने में एपीडा की भूमिका की भी सराहना की।

फोर्टिफाइड चावल चावल के आटे को आयरन, फोलिक एसिड और विटामिन बी12 जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों के साथ मिलाकर बनाया जाता है। फोर्टिफाइड मिश्रण को प्राकृतिक चावल के दानों जैसा आकार दिया जाता है, और फिर उसे एक निश्चित अनुपात में नियमित चावल के साथ मिलाकर उसकी पौष्टिकता बढ़ाई जाती है। भारत से फोर्टिफाइड चावल का निर्यात खाद्य फोर्टिफिकेशन में देश की तकनीकी दक्षता को दशार्ता है और वैश्विक खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में योगदान देने की उसकी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है।

छत्तीसगढ़ से पापुआ न्यू गिनी तक इस खेप का सफल निर्यात भारत के कृषि निर्यात क्षेत्र के लिए एक और विशिष्ट उपलब्धि है। यह एपीडा, छत्तीसगढ़ सरकार और निजी क्षेत्र के बीच तालमेलपूर्ण सहयोग को दशार्ता है, जिससे भारत दुनिया के लिए सुरक्षित, पौष्टिक और उच्च गुणवत्ता वाले खाद्य उत्पादों का एक भरोसेमंद और जिम्मेदार आपूर्तिकर्ता बन गया है।

सामाजिक प्रगति तभी संभव है जब नीति के केंद्र में लोग रहें और विकास एक साझा प्रयास बनेः डॉ. मनसुख मांडविया

केंद्रीय श्रम मंत्री ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'सबका साथ, सबका विकास' के दृष्टिकोण को रेखांकित करते हुए कहा कि भारत की यात्रा अंत्योदय के दर्शन से निर्देशित है

केंद्रीय श्रम मंत्री ने कहा कि भारत का विकास पथ ग्लोबल साउथ के लिए एक अनुकरणीय विकास मॉडल प्रस्तुत करता है

दोहा, कतर में दूसरे विश्व सामाजिक विकास शिखर सम्मेलन के पूर्ण अधिवेशन में भारत के राष्ट्रीय वक्तव्य का मूल पाठ

(जीएनएस)।

महामहिमगण, प्रतिनिधिगण और सभी सहयोगी,

इस प्रतिष्ठित मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करना मेरे लिए सम्मान की बात है।

30 साल पहले कोपेनहेगन घोषणा ने लोगों को विकास के केंद्र में रखा था, जिसमें गरीबी उन्मूलन, पूर्ण रोजगार और बेहतर काम और सामाजिक समावेश पर ध्यान केंद्रित किया गया था। आर्थिक विकास और सामाजिक प्रगति के प्रति भारत का दृष्टिकोण इस घोषणा से मेल खाता है।

भारत की विकास गाथा बड़े पैमाने पर परिवर्तन की कहानी है। पिछले 10 वर्षों में लगातार सुधारों, कल्याणकारी कार्यक्रमों के समन्वय और डिजिटल नवाचार के माध्यम से लगभग 25 करोड़ भारतीयों को बहुआयामी गरीबी से बाहर निकाला गया है।

महामहिम,

भारत की यात्रा अंत्योदय के गहन दर्शन से निर्देशित है, जिसका अर्थ है, पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति को सशक्त बनाना। हमारी प्रगति जीवन-चक्र

आधारित ढांचे का परिणाम है, जहां एक बच्चे को स्वस्थ आधार मिलता है, एक युवा वयस्क को शिक्षा और आजीविका के लिए सहायता मिलती है, एक श्रमिक को अच्छा काम मिलता है और एक बुजुर्ग को वृद्धावस्था में सम्मान और आय सुरक्षा की गारंटी मिलती है।

आज 118 मिलियन स्कूली बच्चों को पौष्टिक मिड डे मील मिलता है, 800 मिलियन से अधिक नागरिकों को खाद्य सुरक्षा प्रदान की गई है। 425 मिलियन भारतीयों को स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान की गई है और कम आय वाले लोगों को 37 मिलियन से अधिक घर उपलब्ध कराए गए हैं।

2017-18 और 2023-24 के बीच हमारी बेरोजगारी दर 6 प्रतिशत से घटकर 3.2 प्रतिशत हो गई है और महिलाओं की रोजगार दर लगभग दोगुनी हो गई है। लाखों महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों में शामिल किया गया है। ऋण वितरण ने इन महिला-नेतृत्व वाली स्थानीय संस्थाओं की शक्ति को और बढ़ाया है।

एनक्यूएम के अंतर्गत डीएसटी द्वारा समर्थित स्टार्टअप ने 500 किलोमीटर क्वांटम-सेफ नेटवर्क का प्रदर्शन किया

(जीएनएस)।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के राष्ट्रीय क्वांटम मिशन (एनक्यूएम) के अंतर्गत समर्थित 8 स्टार्टअप्स में से एक ने 500 किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में फैले भारत के पहले व्यापक क्वांटम कुंजी वितरण (क्यूकेडी) नेटवर्क का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया है।

बेंगलुरु की क्वांटम प्रौद्योगिकी कंपनी, क्यूएनयू लैब्स प्राइवेट लिमिटेड की यह बड़ी उपलब्धि है। इसमें मौजूदा ऑप्टिकल फाइबर अवसंरचना पर तैनात नेटवर्क शामिल क्वांटम-सुरक्षित संचार में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

उभरते विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार सम्मेलन (ईएसटीआईसी 2025) के दौरान कल 500 किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में फैले (क्यूकेडी) नेटवर्क के प्रदर्शन की औपचारिक घोषणा की गई। इस अवसर पर केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह, भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार प्रो. अजय के. सूद, राष्ट्रीय क्वांटम मिशन के मिशन गवर्निंग बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. अजय चौधरी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव प्रो. अभय करंदीकर और अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

क्वांटम सुरक्षा कवच के रैक के नए डिजाइन का अनावरण किया गया

क्यूएसके रैक में क्यूकेडी प्रणाली स्थापित

यह प्रदर्शन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की परिकल्पना के अनुरूप है, जो भारत को उभरती प्रौद्योगिकियों और सुरक्षित डिजिटल बुनियादी ढांचे में एक प्रमुख नेतृत्व के रूप में देखते हैं। यह भारत को दूसरी क्वांटम क्रांति में एक प्रमुख प्रतिनिधि के रूप में भी स्थापित करता है, जो सुरक्षित डिजिटल संचार और उन्नत साइबर सुरक्षा के लिए नए क्षितिज खोलता है। यह प्रदर्शन आई-हब क्वांटम टेक्नोलॉजी फाउंडेशन के माध्यम से वित्त पोषित एक परियोजना के तहत संभव हुआ। यह आईआईएसईआर पुणे में आयोजित राष्ट्रीय अंतःविषय साइबर-भौतिक प्रणालियों (एनएमआईसीपीएस) पर राष्ट्रीय मिशन के तहत एक प्रौद्योगिकी नवाचार केंद्र है।

भारतीय सेना और इसकी दक्षिणी कमान ने क्षमता प्रदर्शन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस क्यूकेडी परीक्षण को सक्षम करने के लिए टेस्ट-बेड ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क को विशेष रूप से दक्षिणी कमान सिग्नल द्वारा योजनाबद्ध और इंजीनियर किया गया था।

यह उपलब्धि भारत में क्वांटम-सुरक्षित संचार की प्रगति में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और राष्ट्रीय क्वांटम मिशन के उद्देश्यों को साकार करने में प्रत्यक्ष योगदान देती है। यह पहल देश की तकनीकी क्षमताओं को मजबूत करने के लिए प्रमुख क्षेत्रों में सहयोग को प्रोत्साहन देने में प्रौद्योगिकी, अनुसंधान, उद्योग और रक्षा इकोसिस्टम (स्ट्राइड) के तालमेल का उदाहरण है।

इसी स्टार्टअप, क्यूएनयू लैब्स द्वारा क्यूएसआईपी (पैकेज में क्वांटम रैंडम नंबर जेनरेटर सिस्टम), माननीय केंद्रीय मंत्री द्वारा ईएसटीआईसी 2025 में अपने उद्घाटन भाषण के दौरान माननीय प्रधानमंत्री को प्रस्तुत किया गया था।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने राष्ट्रव्यापी डीएलसी अभियान 4.0 का औपचारिक रूप से शुभारंभ किया

(जीएनएस)।

केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष विभाग राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने आज औपचारिक रूप से राष्ट्रव्यापी डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र (डीएलसी) अभियान 4.0 का शुभारंभ किया, जो पेंशनभोगियों के लिए जीवन प्रमाण पत्र को सरल बनाने के लिए सरकार के चल रहे अभियान में एक महत्वपूर्ण कदम है।

एक नवंबर से शुरू होकर 30 नवंबर तक महीने भर चलने वाले डीएलसी अभियान 4.0 के तहत पहले चार दिनों में ही 55 लाख से अधिक डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र जारी किए जा चुके हैं, जबकि महीने भर का लक्ष्य दो करोड़ प्रमाण पत्र का रखा गया है।

पिछले वर्ष के डीएलसी अभियान 3.0 की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए, डॉ. जितेंद्र सिंह ने बताया कि विशेष रूप से, 52.73 लाख डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र चेहरा प्रमाणीकरण तकनीक का उपयोग करके जमा किए गए, जबकि 72.64 लाख ईपीएफओ पेंशनभोगियों से थे।

केंद्रीय मंत्री ने यह भी बताया कि

पिछले वर्ष का अभियान 3.0 नवंबर 2024 में 845 जिलों और शहरों में 1,984 स्थानों पर चलाया गया था, जिसके दौरान 1.62 करोड़ डीएलसी जारी किए गए, जिनमें से 49.78 लाख केंद्र सरकार के पेंशनभोगियों के थे। इनमें से 85,200 से अधिक पेंशनभोगी 90 वर्ष से अधिक आयु के थे, और 2,200 से अधिक पेंशनभोगी 100 वर्ष से अधिक आयु के थे।

वर्तमान अभियान 4.0, देश भर के लगभग 2,000 जिलों, शहरों और कस्बों में 2,500 शिविरों के माध्यम से और 1,250 नोडल अधिकारियों के समन्वय से, प्रमुख बैंकों, इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक और पेंशनभोगी कल्याण संघों की भागीदारी से क्रियान्वित किया जा रहा है। इस पहल में लक्ष्य को प्राप्त करने के दृष्टिकोण को अपनाया गया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रत्येक पेंशनभोगी—चाहे वह किसी भी स्थान पर हो या उसका आवागमन सीमित हो—अपना जीवन प्रमाण पत्र निर्बाध रूप से जमा कर सके।

डीएलसी अभियान 4.0, 19 पेंशन वितरण बैंकों, इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक (आईपीपीबी), पेंशनभोगी कल्याण संघों, यूआईडीएआई, इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, ईपीएफओ, रेलवे, सीजीडीए और दूरसंचार विभाग के सहयोग से चलाया जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य दूरदराज और ग्रामीण इलाकों सहित देश भर के हर पेंशनभोगी तक पहुंचना है। अकेले आईपीपीबी अपने 1.8 लाख डाकियों एवं ग्रामीण डाक सेवकों के नेटवर्क के माध्यम से 1,600 से ज्यादा जिलों और उप-मंडलों में शिविर लगा रहा है तथा पेंशनभोगियों को उनके पेंशन वितरण

माइटी ने सभी क्षेत्रों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के सुरक्षित, समावेशी और जिम्मेदारी के साथ अपनाने को सुनिश्चित करने के लिए इंडियाएआई मिशन के तहत भारत में एआई गवर्नेंस के दिशानिर्देश जारी किए

(जीएनएस)।

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (माइटी) ने आज इंडियाएआई मिशन के तहत भारत एआई गवर्नेंस दिशानिर्देश जारी किए, जो सभी क्षेत्रों में सुरक्षित, समावेशी और जिम्मेदारी पूर्ण एआई अपनाने को सुनिश्चित करने के लिए एक व्यापक ढांचा है।

दिशानिदेर्शों का औपचारिक अनावरण भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार प्रो. अजय कुमार सूद ने किया। इस अवसर पर माइटी सचिव श्री एस. कृष्णन, माइटी में अपर सचिव, इंडियाएआई मिशन के सीईओ, एनआईसी के महानिदेशक श्री अभिषेक सिंह, माइटी की वैज्ञानिक 'जी' एवं जीसी सुश्री कविता भाटिया और इंडियाएआई मिशन की सीओओ सुश्री कविता भाटिया तथा आईआईटी

मद्रास के प्रो. बी. रवींद्रन भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार कार्यालय की सलाहकार एवं वैज्ञानिक 'जी' डॉ. प्रीति बंजल और वैज्ञानिक सचिव डॉ. परविंदर मैनी भी शामिल हुए।

यह लॉन्च भारत-एआई प्रभाव शिखर सम्मेलन 2026 (इंडिया-एआई इम्पैक्ट समिट 2026) से पहले एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, क्योंकि भारत जिम्मेदार एआई शासन में अपने नेतृत्व को मजबूत कर रहा है।

ये दिशानिर्देश अत्याधुनिक नवाचार को बढ़ावा देने और व्यक्तियों एवं समाज के लिए जोखिमों को कम करते हुए सभी के लिए एआई को सुरक्षित रूप से विकसित और लागू करने के लिए एक मजबूत शासन ढांचे (गवर्नेंस फ्रेमवर्क) का प्रस्ताव करते हैं। इस ढांचे में चार प्रमुख घटक शामिल हैं:

नैतिक और जिम्मेदार एआई के लिए सात मार्गदर्शक सिद्धांत (सूत्र)।

एआई शासन के छह स्तंभों पर प्रमुख सिफारिशें।

लघु, मध्यम और दीर्घकालिक समय-सीमाओं के लिए तैयार एक कार्य योजना।

पारदर्शी और जवाबदेह एआई परिनियोजन सुनिश्चित करने के लिए उद्योग, डेवलपर्स और नियामकों के लिए व्यावहारिक दिशानिर्देश।

सीएसआईआर ने ईएसटीआईसी 2025 में उन्नत सामग्री एवं विनिर्माण क्षेत्र में भारत की प्रगति को प्रदर्शित किया

(जीएनएस)।

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने सशक्त विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन (ईएसटीआईसी) 2025 के तीसरे दिन एक प्रभावशाली तकनीकी सत्र का आयोजन किया, जिसमें उन्नत सामग्री एवं विनिर्माण क्षेत्र में भारत की प्रगति पर प्रकाश डाला गया। इस सत्र में देश के नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र को आकार देने वाली परिवर्तनकारी तकनीकों पर चर्चा करने के लिए अग्रणी वैज्ञानिक, नवप्रवर्तक और उद्यमी एक साथ आए।

उन्नत सामग्री एवं विनिर्माण पूर्ण सत्र की अध्यक्षता सीएसआईआर की महानिदेशक और डीएसआईआर की सचिव डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्वी ने की, जिसमें इस बात पर विविध चर्चा हुई कि किस प्रकार उन्नत सामग्री उत्पाद प्राप्ति, औद्योगिक डिजाइन और स्थिरता को पुनर्परिभाषित कर रही है।

पूर्ण अधिवेशन में बोलते हुए, सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. (श्रीमती) एन. कलैसेल्वी ने इस बात पर जोर दिया कि विज्ञान, अनुसंधान एवं विकास, तथा उन्नत सामग्री, विकसित भारत 2047 के प्रमुख स्तंभ हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सामग्री विज्ञान, स्वच्छ ऊर्जा, जैव प्रौद्योगिकी और उभरती प्रौद्योगिकियों में उपलब्धियाँ देश के विकास पथ को आकार देंगी। सीएसआईआर और भारत के प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों द्वारा अत्याधुनिक अनुसंधान में अग्रणी भूमिका निभाते हुए, भारत एक तकनीकी रूप से सशक्त, आत्मनिर्भर और नवाचार-संचालित भविष्य की नींव रख रहा है।

डॉ. कलैसेल्वी ने आगे कहा कि ईएसटीआईसी 2025 एक प्रभावशाली मंच के रूप में कार्य करता है जहाँ विचार, विज्ञान और उन्नत प्रौद्योगिकियाँ एक-दूसरे से जुड़ती हैं - जिससे भविष्य के लिए तैयार और ज्ञान-संचालित भारत के निर्माण में तेजी आएगी।

मुख्य भाषण देते हुए जेएनसीएएसआर, बेंगलुरु के पूर्व अध्यक्ष प्रो. गिरिधर उदयपी राव कुलकर्णी ने बताया कि कैसे दुनिया पदार्थ से पदार्थों की ओर बढ़ रही है—कच्चे तत्वों से लेकर सटीकता, प्रदर्शन और उद्देश्य के साथ डिजाइन की गई इंजीनियर संरचनाओं तक।

जनजातीय गौरव वर्ष पखवाड़ा का उत्सव देश भर में हर्षोल्लास के साथ जारी

संस्कृति, शिक्षा और सामुदायिक भागीदारी के जरिए भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती मनाने के लिए राष्ट्रव्यापी गतिविधियाँ

(जीएनएस)।

धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में चल रहे जनजातीय गौरव वर्ष पखवाड़ा (1-15 नवंबर 2025) के तहत, देश भर में सांस्कृतिक, शैक्षिक और जागरूकता गतिविधियों की एक श्रृंखला आयोजित की जा रही है। ये तमाम समारोह भारत की अपनी जनजातीय विरासत के प्रति गहरे सम्मान और राष्ट्र की तरक्की में जनजातीय समुदायों के उल्लेखनीय योगदान को दर्शाते हैं।

देश के राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में, इन कार्यक्रमों के दौरान जनजातीय समुदायों, छात्रों और संस्थानों की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखी जा रही है, जो माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व और

माननीय जनजातीय मामलों के मंत्री श्री जुएल ओराम के मार्गदर्शन में गौरव, एकता और सशक्तिकरण की साझा भावना को दर्शाता है।

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में, जारवा क्षेत्र में एक वृक्षारोपण अभियान चलाया गया, जो जनजातीय समुदायों और प्रकृति के बीच गहरे रिश्तों का प्रतीक है और पारिस्थितिक संरक्षण को भी बढ़ावा देता है।

आंध्र प्रदेश में, इस मौके पर समारोह के दौरान में कई शैक्षिक और क्षमता निर्माण पहलों का आयोजन किया गयाः

सिरपुर टी, केबी आसिफाबाद में एक चित्रकला प्रतियोगिता ने छात्रों को जनजातीय संस्कृति और पहचान को रचनात्मक रूप से व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया।

एकीकृत जनजातीय विकास एजेंसी (आईटीडीए), पार्वतीपुरम ने अधिकारियों और क्षेत्रीय कर्मचारियों के लिए प्रमुख पहलों - पीएम जनमन, धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान और आदि कर्मयोगी अभियान पर एक अभिविन्यास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

इसी प्रकार, आईटीडीए नेल्लोर ने 17 विभागों के साथ एक दिवसीय अभिविन्यास सत्र आयोजित किया, जिसमें विस्तृत प्रस्तुतियों और चचाओं के जरिए मंत्रालय के 25 प्रमुख जनजातीय विकास गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

एआई एक ऐसी क्षैतिज एवं व्यापक प्रौद्योगिकी है, जो जीवन को बदल सकती है और विकसित भारत 2047 की दिशा में देश की प्रगति को गति दे सकती हैः श्री एस. कृष्णन

(जीएनएस)।

भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एमईआईटीवाई) ने उभरते विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन (ईएसटीआईसी 2025) में कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर एक उच्चस्तरीय पैनल चर्चा का आयोजन किया।

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सचिव श्री एस. कृष्णन की अध्यक्षता में आयोजित इस सत्र में सरकार, शिक्षा जगत और उद्योग जगत के प्रमुख लोगों ने एक मंच पर आकर नवाचार, समावेशन और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारत द्वारा एआई के जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग के तौर-तरीकों पर विचार-विमर्श किया।

इस पैनल चर्चा ने आगामी इंडिया-एआई इम्पैक्ट समिट 2026 के लिए भी मंच तैयार किया। इंडिया-एआई इम्पैक्ट समिट में भारत के विकसित होते एआई इकोसिस्टम - जिसमें डिजिटल बुनियादी ढांचे का विस्तार और स्वदेशी बड़े भाषा मॉडल को आगे बढ़ाने से लेकर नैतिक एआई शासन को मजबूत करने और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना शामिल है - पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा।

सत्र का उद्घाटन करते हुए, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सचिव श्री एस. कृष्णन ने कहा, 'सभी प्रौद्योगिकियों का महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इनका समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है, ये जीवन की गुणवत्ता को कैसे बेहतर बनाती हैं और ये देश के लोगों को क्या प्रदान करती हैं। भारत के लिए, यह वास्तव में एआई जैसी क्षैतिज एवं व्यापक प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने का एक अवसर है ताकि देश का 2047 तक 'विकसित भारत' बनने की राह पर दृढ़ता से अग्रसर होना सुनिश्चित हो सके।'

एक विश्वस्तरीय एआई इकोसिस्टम के निर्माण हेतु इंडियाएआई मिशन के एकीकृत दृष्टिकोण पर प्रकाश डालते हुए, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव तथा राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र के महानिदेशक एवं इंडियाएआई मिशन के सीईओ श्री अभिषेक सिंह ने कहा, 'एआई से जुड़े नवाचार के रास्ते खोलने हेतु, इंडियाएआई मिशन हमारी राह में मौजूद सभी कमियों को दूर कर रहा है। हमारी सबसे बड़ी खूबी हमारे पास उपलब्ध मानव पूंजी है, लेकिन एआई मॉडल एवं एप्लिकेशन बनाने हेतु हमें सुलभ कंप्यूटर, गुणवत्ता वाले डेटासेट और निरंतर निवेश की भी आवश्यकता है। इस मिशन की सात-स्तंभों वाली रणनीति, जिसमें कम लागत वाले कंप्यूटर, डेटा प्लेटफॉर्म, फाउंडेशन मॉडल, स्टार्टअप संबंधी समर्थन और सुरक्षित व भरोसेमंद एआई के लिए उपकरण शामिल हैं, के जरिए हम एक ऐसा इकोसिस्टम बना रहे हैं जो भारत को दुनिया में सर्वश्रेष्ठ के बराबर आने में सक्षम बनाता है।'

संसाधनों की कमी के बावजूद एआई से जुड़ी स्वदेशी क्षमताओं के निर्माण की भारत की अद्वितीय क्षमता के बारे में अंतर्दृष्टि साझा करते हुए, जोहो कॉरपोरेशन के सह-संस्थापक और मुख्य वैज्ञानिक डॉ. श्रीधर वेम्बू ने कहा, 'हमें बजट और संसाधन संबंधी बाधाओं को दूर करने के लिए एक अलग रास्ता खोजना होगा। एक प्रौद्योगिकीविद् के रूप में, मैं इस प्रक्रिया में गहराई से शामिल रहा हूं और मेरा सचमुच मानना है कि आगे बेहतर व वैकल्पिक रास्ते मौजूद हैं। वास्तव में, जब आपके पास सभी संसाधन उपलब्ध नहीं होते हैं, तो यही बाधाएं आपको बेहतर समाधान खोजने के लिए प्रेरित करती हैं। मेरा सचमुच मानना है कि एक नया विज्ञान उभरने की प्रतीक्षा में है, एक पूरी तरह से अलग आधार जो इन समस्याओं से निपटने के हमारे तरीके को बदल सकता है।'

सत्र की शुरूआत प्रमुख नवप्रवर्तकों और शोधकताओं के व्याख्यानों से हुई, जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में एआई की परिवर्तनकारी क्षमता पर अपने विचार साझा किए। निरामई हेल्थ एनालिटिक्स की संस्थापक, सीईओ और सीटीओ डॉ. गीता मंजूनाथ ने बताया कि कैसे एआई-संचालित नवाचार स्तन कैंसर की पहचान को अधिक किफायती और सुलभ बना रहे हैं और स्वास्थ्य सेवा में व्याप्त असमानताओं को कम कर रहे हैं। आईबीएम रिसर्च (एआई) के उपाध्यक्ष डॉ. श्रीराम राघवन ने एआई की प्रगति को गति देने में खुले नवाचार इकोसिस्टम की शक्ति पर जोर दिया। एनसीआर के अध्यक्ष एवं प्रोफेसर तथा साउथ कैरोलिना विश्वविद्यालय में एआई संस्थान के संस्थापक निदेशक डॉ. अमित शेठ ने ऊर्जा, बिजली और मैन्यूफैक्चरिंग जैसे क्षेत्रों में उत्पादकता बढ़ाने वाली जेनेरिक एआई से लेकर उद्देश्य-संचालित व क्षेत्र-विशिष्ट प्रणालियों के विकास के बारे में बात की।

इसके बाद 'नवाचार और समावेशन के लिए जिम्मेदार एआई' विषय पर एक पैनल चर्चा हुई, जिसका संचालन डीपटेक फॉर भारत फाउंडेशन के सह-संस्थापक तथा प्रसार भारती के पूर्व सीईओ श्री शशि शेखर वेम्पति ने किया।

भारतीय नौसेना स्वदेशी हाइड्रोग्राफिक उत्कृष्टता में एक नया अध्याय जोड़ते हुए 'इक्षक' को कमीशन करने जा रही है

एसवीएल इक्षक भारत के समुद्री क्षितिज पर सटीकता, उद्देश्य और आत्मनिर्भरता का एक गौरवशाली प्रतीक है

(जीएनएस)।

भारतीय नौसेना अपनी जल सर्वेक्षण क्षमताओं को और सशक्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाने जा रही है। सर्वेक्षण पोत (वृहद) [एस.वी.एल.] श्रेणी के तीसरे और दक्षिणी नौसेना कमान में शामिल होने वाले पहले पोत इक्षक का जलावतरण 6 नवंबर, 2025 को कोच्चि के नौसेना बेस में एक भव्य समारोह में किया जाएगा। इस अवसर पर नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के. त्रिपाठी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे और पोत को औपचारिक रूप से नौसेना की सेवा में शामिल करेंगे।

कोलकाता स्थित गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स (जीआरएसई) लिमिटेड द्वारा निर्मित जहाज इक्षक भारत की बढ़ती आत्मनिर्भरता और स्वदेशी जहाज निर्माण क्षमता का एक उत्कृष्ट प्रतीक है। इस पोत में 80% से अधिक स्वदेशी उपकरणों तथा सामग्री का उपयोग किया गया है, जो आत्मनिर्भर भारत अभियान की सफलता के साथ-साथ जीआरएसई और देश के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के बीच सशक्त होते सहयोग व तकनीकी सामंजस्य को भी दर्शाता है।

'इक्षक' नाम का संस्कृत में अर्थ है 'मार्गदर्शक' और यह शीर्षक इस पोत की भूमिका को सटीकता, उद्देश्य एवं मार्गदर्शन के प्रतीक के रूप में प्रतिबिंबित करता है। यह पोत बंदरगाहों, तटों और नौवहन चैनलों में व्यापक तटीय तथा गहरे समुद्री सर्वेक्षण करने के लिए विशेष रूप से डिजाइन किया गया है। इन सर्वेक्षणों से प्राप्त डेटा न केवल समुद्र में सुरक्षित नौवहन को सुनिश्चित करेगा, बल्कि भारत की समुद्री सुरक्षा और रणनीतिक अवसंरचना को भी सुदृढ़ बनाएगा।

हाई-रिजॉल्यूशन मल्टी-बीम इको साउंडर, ऑटोनॉमस अंडरवाटर व्हीकल (एयूवी), रिमोटली ऑपरेटेड व्हीकल (आरओवी) और चार सर्वे मोटर बोट (एसएमबी) जैसे अत्याधुनिक हाइड्रोग्राफिक एवं समुद्र-विज्ञान उपकरणों से सुसज्जित जहाज इक्षक भारतीय नौसेना के हाइड्रोग्राफिक बेड़े में अभूतपूर्व बहुमुखी प्रतिभा तथा तकनीकी क्षमता जोड़ता है। जहाज में स्थापित हेलीकॉप्टर डेक इसकी परिचालन सीमा को और विस्तार देता है, जिससे यह विभिन्न समुद्री अभियानों और बहु-उद्देशीय गतिविधियों को प्रभावी रूप से अंजाम देने में सक्षम बनता है।

इक्षक का जलावतरण भारतीय नौसेना के सर्वेक्षण और नौवहन मानचित्रण अवसंरचना को सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है। पोत इक्षक स्वदेशी कौशल, तकनीकी उत्कृष्टता और समुद्री नेतृत्व का प्रतीक राष्ट्र की सेवा के लिए तत्पर है। यह अज्ञात समुद्री क्षेत्रों का अन्वेषण करने और भारत की व्यापक समुद्री सीमाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के अपने मिशन के साथ सेवाएं देगा।